हिंदी
विवेक
WE WORK FOR A BETTER WORLD
Issue : 01 -07 February 2026

नया अवसर नई शुरुआत

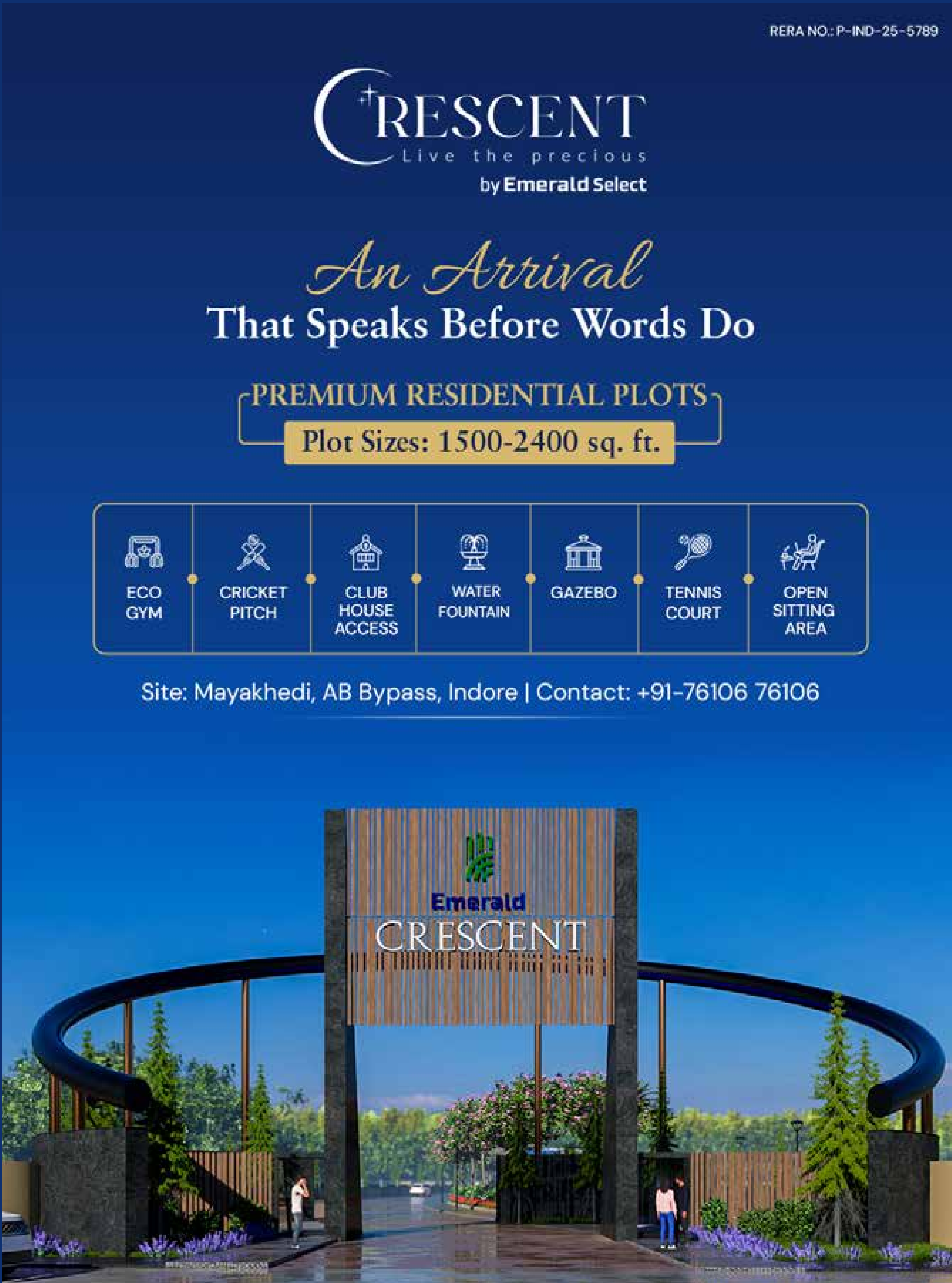
RERA NO.: P-IND-25-5789
CRESCENT
Live the precious
by Emerald Select
An Arrival
That Speaks Before Words Do
PREMIUM RESIDENTIAL PLOTS
Plot Sizes: 1500-2400 sq. ft.
ECO GYM
CRICKET PITCH
CLUB HOUSE ACCESS
WATER FOUNTAIN
GAZEBO
TENNIS COURT
OPEN SITTING AREA
Site: Mayakhedi, AB Bypass, Indore | Contact: +91-76106 76106
Emerald
CRESCENT

अनुक्रमणिका

भारत अब नहीं झेलेगा अमेरिका की दादागिरी	रंजीत कुमार	04
मदर ऑफ ऑल डील्स: बड़ी उपलब्धि	डॉ. नवीन कुमार मिश्र	06
भारत-यूरोप व्यापार समझौता भारत की नई भूमिका	सुभाष चंद्र	09
जनसेवा के पथ पर समर्पित अजित पवार	मृत्युंजय दीक्षित	11
यूजीसी, सर्वोच्च न्यायालय और भारतीय चेतना	प्रो. अलकेश चतुर्वेदी	12
विकासपरक बजट की सम्भावना	सतीश सिंह	14
आंखों में तैरते आक्रोश	स्निग्धा अवतंस	16
परदे के पीछे के नायक	आशीष कुमार 'अंशु'	17
संघ का वनवासी समाज से संवाद	सचिन तिवारी	19
शौर्य की कहानी बॉर्डर-2	अतुल गंगवार	21
टेलीकॉम न हो एकाधिकार	ललित गर्ग	23
बहु आयामी संघ प्रचारक दादासाहब आप्टे	अशोक कुमार सिन्हा	25
न सिगरेट, न तम्बाकू फिर भी कैंसर!	डॉ. धीरज फूलमती सिंह	25
स्वर के शिखर पुरुष पंडित भीमसेन जोशी	प्रतिनिधि	28
समाचार	हिंदी विवेक	29

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

पंजीयन शुल्क

वार्षिक मूल्य : 500 रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : 1200 रुपये
पंचवार्षिक मूल्य : 1800 रुपये, आजीवन मूल्य : 20,000 रुपये

कार्यालय : प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067 फोन नं. : 022-28675299, 022-28678933

भारत अब नहीं झेलेगा अमेरिका की दादागिरी

यूरोपीय संघ और भारत के बीच विश्व व्यापारिक खेल का पासा पलटने वाला व्यापारिक समझौता ऐसे समय में हुआ है जब अमेरिका और चीन छोटे और कम ताकतवर विकासशील व अल्प विकसित देशों पर मनमाने तरीके से आयात शुल्क और तकनीकी उत्पादों के निर्यात पर अपनी दादागिरी थोप रहे थे।

रंजीत कुमार

भारत और यूरोपीय संघ ने एकजुट होकर यह दिखा दिया है कि एकता में ताकत होती है और वे साथ खड़े होकर इस दादागीरी का सामना कर सकते हैं। अमेरिका इस समझौते से अचम्भित है, जबकि चीन मौन रहकर चीन की अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले असर का आकलन कर रहा है। जहां अमेरिका ने भारत और यूरोपीय संघ के देशों पर 50 प्रतिशत तक के आयात शुल्क लगाकर यह दिखाने का प्रयास किया है कि जो देश अमेरिकी सत्ता के आगे घुटने नहीं टेकेंगे, अमेरिका उनके विरुद्ध भारी आयात शुल्क लगाकर उन्हें दंडित करेगा। वहीं चीन ने अपने बाजार में भारतीय उत्पादों के प्रवेश पर न केवल कई तरह की गैरशुल्कीय बाधाएं खड़ी कीं बल्कि रेयरअर्थ मैगनेट जैसे दुर्लभ खनिज उत्पादों के निर्यात पर प्रतिबंध लगाकर भारतीय अर्थव्यवस्था के कई उभरते सेक्टरों जैसे वाहन, इलेक्ट्रॉनिक, अंतरिक्ष, रक्षा जैसे क्षेत्रों के उद्योगों को ठप करने की चाल चली। भारत और यूरोपीय संघ अमेरिका और चीन की इस दादागीरी से मिल कर निपट सकते हैं। यूरोप के पास तकनीकी ज्ञान व वित्तीय संसाधन है, जबकि भारत के पास कुशल मानव संसाधन है।

इस पृष्ठभूमि में यूरोपीय संघ और भारत के बीच नई दिल्ली में 27 जनवरी को यूरोपीय काउंसिल के प्रेजिडेंट एंतोनियो डी कोस्टा और यूरोपीय कमीशन की प्रेजिडेंट उर्सुला वान डेयर लेयन की प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के साथ हुई शिखर वार्ता के दौरान आपसी सामरिक और रक्षा रिश्तों को मजबूती देने

और इसे एक नया आयाम देने का असाधारण समझौता होना बहुत महत्व रखता है। लगभग 18 सालों तक भारत और यूरोपीय संघ के अधिकारियों के बीच चली इस वार्ता के बाद दोनों पक्षों के बीच दीर्घकालीन महत्व की व्यापार सहमति ने पूरी दुनिया का ध्यान खींचा है। यह न केवल भारत और यूरोपीय संघ की 2 अरब जनसंख्या के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्ध होगा बल्कि इसका विश्व राजनीति पर व्यापक असर पड़ेगा।

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने इस वार्ता के सम्पन्न होने के बाद इस समझौते को मदर ऑफ ऑल डील्स यानी अब तक का सबसे बड़ा व्यापार समझौता बताया है क्योंकि इससे पृथ्वी की 2 अरब जनसंख्या को प्रत्यक्ष लाभ तो होगा ही, दोनों पक्ष इस व्यापार सहमति की बदौलत ऐसी शक्ति प्राप्त करेंगे कि अमेरिका और चीन की आर्थिक और तकनीकी दादागीरी को चुनौती दे सकेंगे और स्वतंत्र तौर पर न केवल एक ऐसे वैकल्पिक आर्थिक स्तम्भ की तरह खड़े होंगे बल्कि इसके आगे दोनों बड़ी आर्थिक, तकनीकी और सैन्य शक्तियां अपना अहंकारी रवैया त्यागने को मजबूर होंगे।

27 देशों का यूरोपीय संघ साझा तौर पर दुनिया की दूसरी बड़ी आर्थिक शक्ति (जीडीपी 21 ट्रिलियन डॉलर) है जिसके साथ दुनिया की वर्तमान चौथी बड़ी आर्थिक शक्ति भारत की व्यापारिक साझेदारी से एक ऐसी अभेद्य दीवार बन कर खड़ी होगी कि चीन और अमेरिका इससे सीधे तौर पर टकराने की हिम्मत नहीं करेंगे। अमेरिका का सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) लगभग 30 ट्रिलियन डॉलर, दूसरे स्थान पर चीन का 17 ट्रिलियन डॉलर है, जबकि चौथे स्थान पर पहुंच चुके भारत का जीडीपी लगभग सवा 4 ट्रिलियन डॉलर है। इस तरह यूरोपीय संघ के 21 ट्रिलियन डॉलर और भारत की सवा 4 ट्रिलियन डॉलर वाली अर्थव्यवस्था हाथ मिला ले तो चीन और अमेरिका दोनों को भारत और यूरोपीय संघ की साझा तकनीक और कुशल मानव संसाधन की शक्ति का लोहा मानना होगा।

वर्तमान में भारत और यूरोपीय यूनियन के बीच लगभग 138 अरब डॉलर का द्विपक्षीय व्यापार हो रहा है, जबकि भारत और चीन के बीच लगभग 125 अरब डॉलर का, जिसमें चीन को भारत का निर्यात लगभग 100 अरब डॉलर था। दूसरी ओर भारत और यूरोपीय यूनियन के बीच द्विपक्षीय व्यापार भारत के पक्ष में थोड़ा झुका है, जबकि अमेरिका के साथ भी भारत का 135 अरब द्विपक्षीय व्यापार भारत के पक्ष में झुका है। अमेरिका और यूरोपीय संघ दोनों की भारत से यही शिकायत रहती थी कि भारत में आयात शुल्क बहुत अधिक है, जबकि भारत और यूरोपीय संघ ने लगभग 95-98 प्रतिशत सामान को शुल्क मुक्त कर दिया है तो इससे यह आशा बनती है कि दोनों पक्षों के व्यापारिक समुदाय को अपना माल बेचने के लिए दोनों एक-दूसरे के पूरक सिद्ध होंगे और उन्हें चीन और अमेरिका के बाजारों की चिंता नहीं होगी। भारत और यूरोपीय संघ के 27 देशों के बीच जब एक-दूसरे के उत्पाद एक-दूसरे के यहां शुल्क मुक्त बेचे जा सकेंगे तो दोनों देशों के उपभोक्ताओं को सबसे अधिक लाभ मिलेगा और इस तरह भारत और यूरोप में एक-दूसरे के उत्पादों की मांग इतनी तेजी से बढ़ने लगेगी कि दोनों देशों के उत्पादकों को अमेरिका और चीन के बाजारों में झांकने की मजबूरी नहीं रहेगी। भारत-यूरोपीय संघ के बीच शुल्क मुक्त व्यापारिक आयात निर्यात न केवल दोनों के बीच कुछ महीनों के भीतर ही द्विपक्षीय व्यापार में चार चांद लगाएंगे बल्कि इस समझौते से दोनों के बीच

खुला व्यापार इतना तेजी से बढ़ने लगेगा कि जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। यूरोपीय यूनियन के 27 देशों में लगभग 45 करोड़ जनसंख्या के लिए भारतीय कपड़ा, चमड़ा, समुद्री, इलेक्ट्रॉनिक और छोटे उपभोक्ता उत्पादों की मांग में अचानक भारी बढ़ोतरी हम देखेंगे क्योंकि शून्य शुल्क लगाए जाने से यूरोप में भारतीय माल चीनी माल से भी सस्ते हो जाएंगे। दूसरी ओर भारत का लगभग 40-45 करोड़ मध्यम वर्ग वाहन, शराब व आधुनिक औद्योगिक सामान, मशीनरी जैसे यूरोपीय उत्पादों के लिए एक बड़ा व काफी आकर्षक बाजार सिद्ध होगा। इस तरह भारत और यूरोपीय संघ के बीच सालाना व्यापार में प्रत्येक वर्ष 15-20 प्रतिशत बढ़ोतरी की आशा की जा सकती है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यूरोप के बाजार में जिन भारतीय उत्पादों पर शून्य आयात शुल्क हो जाएगा, वे मुख्यतः श्रम आधारित उद्योग होंगे जैसे कि कपड़ा, चमड़ा, हस्तकरघा, समुद्री आदि होंगे। जिससे भारत में रोजगार के अवसरों में निरंतर वृद्धि होती जाएगी। वास्तव में भारत-यूरोप व्यापार समझौता दुनिया के लिए एक आदर्श माना जा सकता है। ■■■

संधि

डॉ. नवीन कुमार मिश्र

भारत-यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार समझौता मात्र एक संधि के तौर पर नहीं है बल्कि एक व्यापक आर्थिक और रणनीतिक साझेदारी के रूप में कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। अब इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि नियमों को लचीला बनाकर बाजार तक उत्पादों की पहुंच को किस सीमा तक संतुलित किया जाता है।

नई दिल्ली में आयोजित भारत-यूरोपीय संघ शिखर सम्मेलन के दौरान ऐतिहासिक मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) की औपचारिक घोषणा भारत के 77वें गणतंत्र दिवस समारोह के समापन के साथ हुई, जिसमें यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन और यूरोपीय परिषद के अध्यक्ष एंटोनियो कोस्टा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। 18 वर्षों की लम्बी वार्ता के बाद भारत-यूरोपीय संघ के बीच मुक्त व्यापार समझौता केवल एक अध्याय का समापन नहीं है बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में भारत के उदय के एक नए चरण की शुरुआत है। यह आर्थिक रूप से आवश्यक और रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण भी माना जा रहा है। दोनों बाजारों के विशाल आकार और प्रस्तावित प्रतिबद्धताओं की व्यापकता को देखते हुए इस समझौते में उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के साथ भारत के सम्बंधों को नया रूप देने की क्षमता है। भारत का इस तरह की व्यापकता, महत्वाकांक्षा और रणनीतिक महत्व रखने वाले व्यापार समझौते बहुत कम हैं। इसे सभी समझौतों की जननी कहा जाता है और यह पारम्परिक शुल्क उदारीकरण से कहीं आगे का दृष्टिकोण रखता है। यह भारत की व्यापार कूटनीति की एक ऐतिहासिक उपलब्धि है, जो वैश्विक उथल-पुथल के इस दौर में एक विश्वसनीय, समान विचारधारा वाले क्षेत्र के साथ एक गहरी आर्थिक साझेदारी स्थापित करता है। यह समझौता केवल व्यापार के आंकड़ों को बढ़ाने या नए बाजार खोलने तक सीमित नहीं है बल्कि वैश्विक मंच पर भारत की बढ़ती विश्वसनीयता और व्यापार की बढ़ती क्षमता को दर्शाता है। ट्रम्प द्वारा लगाए गए टैरिफ के कारण भारत को अपने निर्यात आधार को व्यापक बनाने और नए एवं अविकसित बाजारों की खोज करने के लिए प्रोत्साहित करने वाला है। भारत और यूरोपीय संघ सम्मिलित रूप से वैश्विक जीडीपी का 23 प्रतिशत और वैश्विक जनसंख्या का 25 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसके कारण अपार सम्भावनाओं वाला यह समझौता दुनिया के सबसे बड़े व्यापार समझौतों में से एक बन गया है। यह मुक्त व्यापार समझौता दोनों पक्षों के लिए लाभदायक है, जिसका मुख्य कारण भारत और यूरोपीय

मदर ऑफ ऑल डील्स: बड़ी उपलब्धि

संघ के अलग-अलग तरह के उत्पाद आयात-निर्यात के कारण वे एक-दूसरे के साथ सीधे प्रतिस्पर्धी नहीं हैं। विदेशी समानों के आने से वे भारतीय उत्पादों को प्रभावित करने वाले नहीं है बल्कि एक अच्छी तालमेल दिखाई पड़ने वाली है। भारत मुख्य रूप से श्रम-प्रधान वस्तुओं जैसे वस्त्र, जूते और ऑटो पार्ट्स के अलावा स्मार्टफोन, सामान्य दवाएं, तराशे और पॉलिश किए हुए हीरे जैसे उत्पाद और डीजल और विमानन टरबाइन ईंधन सहित प्रसंस्कृत ईंधन का निर्यात करता है। इसके विपरीत यूरोपीय संघ पूंजी और प्रौद्योगिकी-प्रधान उत्पाद (मशीनरी और विमान), उन्नत वस्तुएं जैसे इलेक्ट्रॉनिक घटक और चिकित्सा उपकरण, एवं आवश्यक औद्योगिक सामग्री जैसे कच्चे हीरे और धातु स्क्रैप की आपूर्ति करता है। अब शुल्क- कटौती से लागत कम होगी और घरेलू उद्योगों को हानि पहुंचाए बिना व्यापार बढ़ेगा। इस समझौते से इलेक्ट्रॉनिक्स, इंजीनियरिंग सामान, ऑटोमोबाइल जैसे विनिर्माण क्षेत्र में विकास और रोजगार सृजन होने वाला है।

एफटीए के अंतर्गत बेहतर बाजार पहुंच और नियामक सहयोग से भारतीय निर्यातकों को छोटे, लेकिन तेजी से बढ़ते यूरोपीय संघ के बाजारों में विस्तार करने में सहायता मिलेगी। सेवाओं के निर्यात पर समझौते का प्रभाव भी उतना ही महत्वपूर्ण है। सूचना प्रौद्योगिकी और डिजिटल सेवाएं, जो पहले से ही भारत की एक प्रमुख ताकत हैं, एफटीए की सेवाओं से सम्बंधित प्रतिबद्धताओं और व्यापक गतिशीलता ढांचे के माध्यम से महत्वपूर्ण रूप से बढ़ावा मिल सकता हैं, जिससे कुशल भारतीय पेशेवरों की सुगम आवाजाही सम्भव हो सकेगी।

इंजीनियरिंग और तकनीकी सेवाओं में भारत का मजबूत प्रदर्शन, जो पहले से ही इस क्षेत्र में यूरोपीय संघ के आयात का लगभग 10 प्रतिशत हिस्सा है- को बढ़ावा मिलने की आशा है। आज यूरोपीय संघ को भारत का मुख्य निर्यात केवल 6 सदस्य देशों नीदरलैंड, जर्मनी, इटली, फ्रांस, स्पेन और बेल्जियम में केंद्रित हैं। मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) के अंतर्गत बेहतर बाजार पहुंच और नियामक सहयोग से भारतीय निर्यातकों को छोटे, लेकिन तेजी से बढ़ते यूरोपीय संघ के बाजारों में विस्तार करने में सहायता मिलेगी। स्लोवेनिया, माल्टा और बुल्गारिया जैसे देशों में पहले से ही उत्साह दिखाई दे रहा हैं और यह समझौता पूरे क्षेत्र में इस विविधीकरण को गति देने में सहायता करेगा। यूरोपीय संघ वर्तमान में भारत का दूसरा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है। इसके बाद भी यूरोपीय संघ के कुल बाह्य व्यापार में भारत की हिस्सेदारी तीन प्रतिशत से भी कम है, जबकि भारत के उच्च मूल्य वाले निर्यात और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में यूरोपीय संघ की हिस्सेदारी कहीं अधिक है। यूरोप के लिए भारत हिंद-प्रशांत क्षेत्र में व्यापक क्षमता, विकास और राजनीतिक सहयोग प्रदान करता है।

वैश्विक स्तर पर यूरोपीय संघ और भारत दोनों ही व्यापारिक निर्भरताओं से बाहर निकलने का प्रयास कर रहे हैं, जो उन्हें अमेरिका और चीन द्वारा आर्थिक दबाव के प्रति संवेदनशील बनाती हैं। भारत-यूरोपीय संघ व्यापार समझौते की असली परीक्षा घरेलू स्तर पर इसके क्रियान्वयन में होगी। भारत-यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार समझौता परिणामोन्मुखी है। एक बार लागू होने के बाद इससे उद्योग, सेवा क्षेत्र, लघु एवं मध्यम उद्यम, निवेशक, उपभोक्ता और पेशेवर सभी को समान रूप से लाभ मिलेगा।

■■■

Finest Saffron In The World
5g
50mg
1g
Pack Size Available
0.25g
0.5g
Benefits Of Saffron
• Boosts Brain Health
• Improves Digestion
• Improves Vision
• Prevents Hair Loss
Haldiram's
Vipin Aggarwal
THE SAFFRON EXPERT
TM
केसर तिलक
★दिव्यता ★ समृद्धि ★ शुभ भाग्य
★संपत्ति ★ कैरियर के अच्छे अवसर
अपने भीतर बुद्धि, दूरदर्शिता समृद्धि और भक्ति बढाने के लिए केसर तिलक लगाऐ।
तिलक लगाने का अर्थ है चक्रों और ऊर्जा बिंदुओं को सक्रिय करना जिससे आपके भीतर अधिक सामंजस्य और खुशी का विकास होता है। केसर तिलक **आज्ञा चक्र** पर लगाया जाता है, जो माथे का मध्य भाग है, यह चक्र दिव्यता, अंतर्ज्ञान और बुद्धि से संबंधित है। मनुष्य के सभी कार्य इसी विशिष्ट बिंदु द्वारा नियंत्रित होते हैं, और संतुलित होने पर यह भावनात्मक, शारीरिक और आध्यात्मिक ऊर्जा को बढाता है। **विशुद्धि चक्र** का संबंध संचार और अभिव्यक्ति से है। नाभि मनुष्य के शरीर का सबसे महत्वपूर्ण बिंदु है और यह मानव जीवन का केंद्र है जो **मणिपुर चक्र** से संबंधित है।*
ज्योतिषीय दृष्टि से केसर का तिलक बृहस्पति (बुद्धि, धन, आध्यात्मिकता), बुध (वित्त, बुद्धि, संचार, भावनात्मक ऊर्जा), केतु (अंतर्ज्ञान, अंतर्दृष्टि और आंतरिक शांति की भावना) और मंगल का समर्थन) की ऊर्जा को संतुलित करता है।*
केसर तिलक कैसे तैयार करें
कुछ पिसे हुए केसर के रेशे (धागे) या केसर पाउडर लें, उसमें पवित्र जल या गंगाजल की कुछ बूँदें डालकर पेस्ट बना लें। आपका केसर का तिलक तैयार है। अपने जीवन को बेहतर बनाने और ऊर्जा बिंदुओं को संतुलित करने के लिए **अनामिका उंगली** से माथे, कानों, गले और नाभि पर लगाएँ। चाँदी की डिब्बी में इसे तैयार करना व रखना अधिक शुभ माना जाता है।
*Data on file
GROCERIES IMPEX : +91-9999092561, 9650635204 | vipin@groceriesimpex.com
Registered Office Address : R-49, Rita Block, Shakarpur, Delhi-110092.
Packing Unit : D-94/A, Matiala Extension, Dwarka, New Delhi-110059.

समझौते में भारत की नई भूमिका

भारत ने जल्दबाजी में कोई समझौता नहीं किया बल्कि अपने हितों की रक्षा करते हुए संतुलित और लाभकारी शर्तों पर हस्ताक्षर किए। यह डील बताती है कि भारत अब वैश्विक व्यापार में केवल भागीदार नहीं बल्कि प्रभावशाली खिलाड़ी बनना चाहता है।

लगभग 18 वर्षों की लम्बी वार्ताओं, मतभेदों और जटिल शर्तों के बाद आखिरकार 27 जनवरी, 2026 को भारत और यूरोप के बीच महत्वपूर्ण व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर हो गए। यह केवल एक व्यापारिक डील नहीं है बल्कि बदलते वैश्विक शक्ति संतुलन के बीच भारत की रणनीतिक परिपक्वता, आर्थिक आत्मविश्वास और कूटनीतिक संतुलन का सशक्त संकेत भी है।

यूरोपियन यूनियन विश्व की सबसे बड़ी आर्थिक इकाइयों में से एक है, जिसका सम्मिलित जीडीपी 16 ट्रिलियन डॉलर से अधिक है। ऐसे में भारत के लिए यह समझौता एक विशाल, समृद्ध और तकनीकी रूप से उन्नत बाजार के द्वार खोलता है। वहीं यूरोप के लिए भारत 1.4 अरब की युवा जनसंख्या, तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था और विनिर्माण क्षमताओं वाला भरोसेमंद साझेदार बनकर उभरा है।

यह समझौता केवल आयात-निर्यात को आसान बनाने तक सीमित नहीं है। इसके माध्यम से तकनीक हस्तांतरण, हरित ऊर्जा, डिजिटल व्यापार, आपूर्ति श्रृंखला सुरक्षा, बौद्धिक सम्पदा अधिकार और सेवा क्षेत्र में सहयोग जैसे अनेक आयाम जुड़ते हैं। विशेषकर फार्मा, ऑटोमोबाइल, टेक्सटाइल, आईटी सेवाओं और कृषि-उत्पादों के लिए नए अवसर खुलेंगे।

सुभाष चंद्र

भारत लम्बे समय से चीन प्लस वन रणनीति के अंतर्गत वैश्विक कम्पनियों के लिए एक विकल्प के रूप में उभर रहा था। इस समझौते ने उस विश्वास को औपचारिक रूप दे दिया है। यूरोपीय संघ की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन ने इस समझौते को मदर ऑफ ऑल डील्स यानी सभी समझौतों की जननी बताया है। उनका कहना है कि यह समझौता दुनिया के दो सबसे बड़े लोकतांत्रिक देशों को व्यापार के माध्यम से एक मजबूत रिश्ते में जोड़ता है। यदि वैश्विक जीडीपी पर दृष्टि डालें तो उसका लगभग 25 प्रतिशत हिस्सा केवल भारत और यूरोप के पास है। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने भी स्पष्ट किया है कि इस समझौते की रूपरेखा ऐसी है, जिससे भारत और यूरोप दोनों को समान रूप से लाभ मिले। यह समझौता भारत के लिए इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे अंतरराष्ट्रीय व्यापार में हमारी निर्भरता केवल चीन या अमेरिका जैसे देशों पर सीमित नहीं रहेगी। प्रधान मंत्री मोदी के

अनुसार यह साझेदारी आपसी विश्वास और समानता के आधार पर खड़ी है। अनुमान है कि वर्ष 2032 तक यूरोप को होनेवाला भारत का निर्यात दोगुना हो सकता है, जिससे देश में युवाओं के लिए रोजगार के बड़े अवसर पैदा होंगे। इस ऐतिहासिक समझौते का सीधा असर आम लोगों की जेब पर भी दिखाई देगा। यूरोप से आने वाली 90 प्रतिशत से अधिक वस्तुओं पर या तो आयात शुल्क समाप्त कर दिया जाएगा या उसे काफी कम कर दिया जाएगा। उदाहरण के तौर पर मर्सिडीज, ऑडी और बीएमडब्ल्यू जैसी लग्जरी कारें, जो अब तक लगभग 110 प्रतिशत टैक्स के कारण बहुत महंगी थीं, उन पर शुल्क घटाकर लगभग 10 प्रतिशत किए जाने से आने वाले समय में उनकी कीमतों में उल्लेखनीय कमी देखने को मिल सकती हैं।

पिछले कुछ वर्षों में वैश्विक व्यापार पर अमेरिका की आक्रामक नीतियों, प्रतिबंधों और टैरिफ युद्धों का प्रभाव दुनिया ने देखा है। कई देशों ने अनुभव किया कि एकतरफा निर्भरता जोखिमपूर्ण हो सकती है। भारत ने इस परिस्थिति में न तो टकराव का रास्ता चुना, न ही किसी गुट में पूरी तरह शामिल हुआ। उसने मल्टी-अलाइनमेंट की नीति अपनाई जहां अमेरिका, रूस, यूरोप, पश्चिम एशिया और इंडो-पैसिफिक देशों से समान रूप से सम्बंध बनाए रखे। भारत-यूरोप व्यापार समझौता इसी संतुलित नीति का परिणाम है। यह दिखाता है कि भारत अब केवल बाजार नहीं बल्कि नियम-निर्माता की भूमिका में आना चाहता है। इस डील से भारत को तीन बड़े रणनीतिक लाभ मिलते हैं: पहला, निर्यात को बड़ा बाजार- भारतीय उत्पादों को यूरोप में कम शुल्क के साथ प्रवेश मिलेगा। दूसरा, मैन्युफैक्चरिंग बूस्ट - 'मेक इन इंडिया' को यूरोपीय निवेश और तकनीक का साथ मिलेगा और तीसरा, वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में मजबूत स्थान- चीन पर निर्भरता कम करने की यूरोप की नीति में भारत स्वाभाविक साझेदार बनेगा। यह समझौता भारत को एशिया और यूरोप के बीच एक सेतु के रूप में स्थापित करता है। यूरोप हरित ऊर्जा, जलवायु परिवर्तन और डिजिटल नियमों में अग्रणी है। भारत के लिए यह अवसर है कि वह इन क्षेत्रों में यूरोपीय अनुभव और निवेश का लाभ उठाकर अपनी विकास यात्रा को टिकाऊ बनाए। इलेक्ट्रिक मोबिलिटी, ग्रीन हाइड्रोजन, डेटा सुरक्षा और साइबर नियमों में सहयोग भविष्य की दिशा तय करेगा। भारत और यूरोपीय संघ के बीच लगभग दो दशकों तक चली लम्बी बातचीत के बाद हुए मुक्त व्यापार समझौते ने वैश्विक व्यापार जगत का ध्यान आकर्षित किया है। इस समझौते पर अमेरिका की ओर से भी महत्वपूर्ण प्रतिक्रिया सामने आई है।

■■■

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For A Better World
मासिक पत्रिका

शुल्क ₹ 500

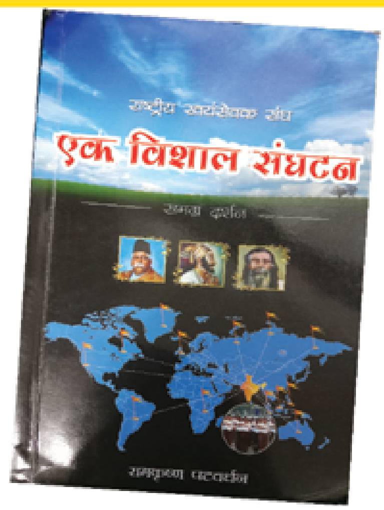

रा. स्व. संघ की स्थापना से लेकर शतकपूर्ति की यात्रा के विभिन्न पड़ावों तथा भविष्य के उद्देश्यों का सम्पूर्ण संकलन व आंकलन करने वाली पुस्तक

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाईन पंजीयन करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA-HINDI VIVEK

Bank : Bank of Maharashtra **Branch :** Prabhadevi

A/C No. : 60085108000 **IFSC :** MAHB0000318

सम्पर्क - 9594991884 Email : hindivivekvargani@gmail.com

जनसेवा के पथ पर समर्पित अजित पवार

उप मुख्य मंत्री अजित पवार महाराष्ट्र के एक कद्दावर नेता थे। विगत 28 जनवरी की सुबह बारामती जाते समय उनका विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिसमें अजित पवार सहित 6 लोगों के मरने की पुष्टि हुई। इस आलेख में उनके राजनीतिक यात्रा पर डालते हैं एक दृष्टि।

28 जनवरी 2026 का दिन महाराष्ट्र की राजनीति विशेषकर शरद पवार परिवार के अत्यंत महत्वपूर्ण सदस्य व लोकप्रिय, दमदार राजनेता अजीत पवार की विमान दुर्घटना में असामयिक मौत हो गई। इस घटना के बाद राजनीतिक गलियारे से लेकर देशवासी स्तब्ध रह गए। इस विमान दुर्घटना में चालक दल के सदस्यों सहित चार अन्य लोगों की भी मौत हो गई।

यह दुर्घटना इतनी भयावह थी कि अजीत पवार के क्षत-विक्षत शव की पहचान उनकी पहनी हुई घड़ी से हुई। इनके परिवार में पत्नी व राज्यसभा सांसद सुनेत्रा और दो बेटे पार्थ व जय हैं। अजीत पवार की महाराष्ट्र के बारामाती संसदीय क्षेत्र में अपार लोकप्रियता है। जैसे ही पवार दादा के निधन का समाचार क्षेत्र में फैला, वैसे ही जनसैलाब उनके आवास की ओर मुड़ गया।

22 जुलाई 1959 को आशा और अनंतराव पवार के घर जन्मे अजीत ने 1982 में चाचा शरद पवार के साथ राजनीति में कदम रखा था। जब उन्हें एक सहकारी चीन मिल बोर्ड में सदस्य के रूप में चुना गया। 1991 में वह बारामती से लोकसभा के लिए चुने गए और फिर उन्होंने यह सीट अपने चाचा शरद पवार के लिए खाली कर दी तब शरद पवार की राजनीति का युग प्रारम्भ हुआ। इसके बाद अजीत पवार बारामती के विधायक के रूप में लगातार सक्रिय रहे। अजीत पवार एक ऐसे राजनेता थे जिनके बारे में कहा जाता है कि वह सुबह 6 बजे ही अपना कार्य करने के लिए तैयार हो जाते थे तथा कार्यकर्ताओं व अधिकारियों को भी मिलने का समय देने लग जाते थे। अजीत पवार 8 बार बारामती से विधायक बने और 6 बार उप मुख्य मंत्री बने, किंतु उनका मुख्य मंत्री बनने का सपना पूरा नहीं हो सका। अजीत पवार कांग्रेस, शिवसेना और भाजपा तीनो दलों के साथ अलग-अलग सरकार में उप मुख्य मंत्री रहे। महाराष्ट्र के वर्तमान मुख्य मंत्री देवेंद्र फडणवीस के साथ तो उन्होंने एक बार रात में उप मुख्य मंत्री पद की शपथ ले ली थी, किंतु बाद में सुबह होते ही वह घर वापस आ गए थे। महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री देवेंद्र फडणवीस का भी मानना व कहना था कि एक बार अजीत दादा महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री अवश्य बनेंगे और राज्य की जनता की सेवा करेंगे, किंतु एक बार फिर यह बात सत्य हुई कि विधाता ने जो लिख रखा है, वही होता है। अजीत पवार कठोर कार्यशैली के लिए तो जाने ही जाते थे, किंतु वह राजकोषीय नीतियों और ग्रामीण विकास से भी भलीभांति परिचित थे। अजीत पवार की राजनीतिक यात्रा उतार-चढ़ाव भरा रहा है। ■■■

मृत्युंजय दीक्षित

भारतीय राष्ट्र-चेतना की शक्ति इसी में है कि वह न्याय को विवेक से, समता को संवेदना से और नियमों को मनुष्यता से जोड़कर देखती है। सर्वोच्च न्यायालय की यह सुनवाई उसी चेतना की न्यायिक अभिव्यक्ति है।

यूजीसी, सर्वोच्च न्यायालय और भारतीय चेतना

प्रो. अलकेश चतुर्वेदी

किसी भी लोकतंत्र की परिपक्वता का वास्तविक परीक्षण तब होता है, जब वह न्याय और समता के नाम पर बनाए गए नियमों की भी न्यायिक समीक्षा से नहीं घबराता। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अधिसूचित यूजीसी (उच्च शिक्षा संस्थानों में समानता को बढ़ावा) विनियम, 2026 और उन पर सर्वोच्च न्यायालय द्वारा लगाया गया अंतरिम स्थगन इसी परिपक्वता का संकेत है। यह केवल एक कानूनी हस्तक्षेप नहीं बल्कि भारतीय समाज की चेतना को आत्ममंथन के लिए अवसर है।

सर्वोच्च न्यायालय की पीठ- मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्य बागची ने जिस गम्भीरता से इन नियमों की भाषा, प्रभाव और सम्भावित सामाजिक परिणामों पर प्रश्न उठाए, वह यह स्पष्ट करता है कि न्यायालय इस विवाद को केवल प्रशासनिक या तकनीकी विषय नहीं मान रहा बल्कि उसे राष्ट्रीय एकता, सामाजिक समरसता और शैक्षणिक वातावरण से जोड़कर देख रहा है।

यूजीसी के नए नियमों का घोषित उद्देश्य भेदभाव की रोकथाम है- धर्म, जाति, लिंग, जन्मस्थान या दिव्यांगता के आधार पर। यह उद्देश्य न तो विवादास्पद है, न असंवैधानिक। भारतीय संविधान स्वयं समानता, गरिमा और अवसर की समानता की गारंटी देता है। समस्या उद्देश्य में नहीं बल्कि उस संरचना में है, जिसके माध्यम से इस उद्देश्य को लागू करने का प्रयास किया गया। याचिकाकर्ताओं की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता विष्णु शंकर जैन ने न्यायालय के समक्ष यह मूल प्रश्न रखा कि क्या भेदभाव को केवल एससी, एसटी और ओबीसी वर्ग तक सीमित कर देना स्वयं में एक नया भेदभाव नहीं रच देता? यदि सामान्य वर्ग का कोई छात्र उत्पीड़न का शिकार होता है- चाहे रैगिंग के माध्यम से, क्षेत्रीय अपमान के द्वारा या किसी अन्य पहचान के आधार पर- तो क्या उसके लिए कोई समान रूप से प्रभावी उपाय उपलब्ध है? यह प्रश्न केवल विधिक नहीं, नैतिक भी है।

मुख्य न्यायाधीश का यह प्रश्न अत्यंत दूरदर्शी था कि यदि उत्तर भारत का छात्र दक्षिण में या दक्षिण का छात्र उत्तर में पढ़ने जाए और उस पर अपमानजनक टिप्पणी हो, जबकि उसकी जाति ज्ञात ही न हो, तो कौन-सा प्रावधान उसे संरक्षण देगा? यह प्रश्न वास्तव में नियमों की अस्पष्टता और अत्यधिक पहचान-केंद्रित दृष्टि की ओर संकेत करता है।

सर्वोच्च न्यायालय की यह टिप्पणी कि नियम प्रथम दृष्टया अस्पष्ट हैं और उनके दुरुपयोग की सम्भावना को नकारा नहीं जा सकता, अत्यंत महत्वपूर्ण है। कानून का सबसे बड़ा दोष उसका दुरुपयोग नहीं बल्कि दुरुपयोग की सम्भावना होता है। जब नियम इस प्रकार गढ़े जाएं कि वे किसी एक वर्ग को डिफॉल्ट पीड़ित और किसी अन्य को डिफॉल्ट

आरोपी की स्थिति में रख दें तो न्याय की आत्मा आहत होती है। यहीं 2012 और 2026 के नियमों के बीच मूल अंतर उभरकर सामने आता है। 2012 के विनियम एससी-एसटी वर्ग पर केंद्रित थे, पर उनका स्वर सलाहात्मक था। वे संस्थानों को संवेदनशील बनने के लिए प्रेरित करते थे, दंड से भयभीत नहीं करते थे। 2026 के नियम बाध्यकारी हैं, उनमें निगरानी, अनिवार्य रिपोर्टिंग और कड़ी कार्रवाई की व्यवस्था है। यह परिवर्तन केवल कानूनी नहीं, मानसिक भी है- विश्वास से नियंत्रण की ओर। न्यायमूर्ति जॉयमाल्य बागची का यह कथन कि शैक्षणिक संस्थानों में देश की एकता दिखाई देनी चाहिए और हम विश्वविद्यालयों को स्वतंत्र व समान वातावरण बनाना चाहते हैं, इस पूरे विवाद का सार है।

विश्वविद्यालय समाज को बांटने की प्रयोगशाला नहीं बल्कि जोड़ने की भूमि रहे हैं। यदि नियमों के कारण कैम्पस में भय, संदेह और क्रॉस-शिकायतों का वातावरण बने तो शिक्षा का मूल उद्देश्य ही संकट में पड़ जाएगा। मुख्य न्यायाधीश की यह पीड़ा कि 75 वर्षों में क्या हम जाति-रहित समाज की ओर बढ़े हैं या पीछे जा रहे हैं? केवल एक प्रश्न नहीं, एक चेतावनी है। जाति आधारित हॉस्टल, पहचान आधारित संरचनाएं और वर्गीकृत संरक्षण- यदि विवेकहीन ढंग से लागू किए गए तो वे उसी सामाजिक विभाजन को स्थाई कर सकते हैं, जिसे समाप्त करने के लिए ये नियम बनाए गए हैं।

सर्वोच्च न्यायालय ने केंद्र सरकार और यूजीसी को नोटिस जारी करते हुए सुझाव दिया कि एक ऐसी समिति पर विचार किया जाए, जिसमें न्यायविद और समाज को समझने वाले लोग हों, जो यह देखें कि इन नियमों का कैम्पस के बाहर क्या प्रभाव पड़ेगा। यह सुझाव स्वयं में एक मध्य मार्ग का संकेत है- न नियमों को अस्वीकार करना, न उन्हें यथावत थोप देना। भारतीय परम्परा का यही मार्ग रहा है। मध्यमार्ग, संतुलन और विवेक- ये हमारी राष्ट्रीय चेतना के मूल तत्व हैं। राज्य का धर्म सहायता करना है, स्थायी निर्भरता पैदा करना नहीं। नियमों का उद्देश्य आत्मनिर्भरता की ओर ले जाना होना चाहिए, न कि पहचान को जीवन भर का परिचय बना देना।

अंततः, सर्वोच्च न्यायालय का यह अंतरिम स्थगन किसी वर्ग की विजय या पराजय नहीं है। यह एक अवसर है- नियमों को और मानवीय, स्पष्ट और संतुलित बनाने का। यदि इन प्रावधानों को राष्ट्रीय एकता, सामाजिक समरसता और शैक्षणिक स्वतंत्रता की कसौटी पर पुनः गढ़ा गया तो यही नियम भविष्य में विवाद का नहीं, विश्वास का आधार बन सकते हैं।

■■■

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समझने के लिए मौलिक एवं संग्रहणीय पुस्तक

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

पद्मश्री रमेश पतंगे लिखित
'हिंदी विवेक' द्वारा प्रकाशित

हम संघ में क्यों हैं...

संघ विचारों की मूल प्रेरणा, संघकार्य को समझने की प्रक्रिया और इन सभी से संघ स्वयंसेवकों को अनायास मिलनेवाले राष्ट्रबोध और कर्तव्यबोध का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

पंजीयन करें

पुस्तक का मूल्य ₹250/-

Draft or Cheque should be drawn in the name of **HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK**

Bank Details : State Bank of India, **Branch -** Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483, भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

बजट 2026

विकासपरक बजट की सम्भावना

आगामी 1 फरवरी को 2026 का बजट पेश होने वाला है। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण बजट को मूर्त रूप तो देंगी, लेकिन ऐसा कयास लगाया जा रहा है कि 2026 का बजट विकासपरक होगा तथा नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने और निवेश को बढ़ाने पर बजट में घोषणा की जा सकती है।

सतीश सिंह

सरकार की वर्तमान नीति विकास और कल्याणकारी उपायों के बीच समन्वय बनाकर 2047 तक देश को एक विकसित राष्ट्र बनाने की है। इसलिए माना जा रहा है कि 1 फरवरी 2026 को केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण इसी दृष्टिकोण को मूर्त रूप देने के लिए बजटीय प्रावधान कर सकती हैं। वैश्विक अनिश्चितता के वातावरण में भी हमारा देश दुनिया की सबसे तेज गति से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्थाओं में से एक बना हुआ है। फिर भी इस गति को बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि राजस्व की आमद और पूंजीगत खर्च के बीच संतुलन बनाए रखा जाए। जिससे राजकोषीय घाटा को जीडीपी के 4.2% से 4.4% के बीच रखने के लिए बजटीय प्रावधान किए जा सकते हैं। साथ ही बिना कर्ज लिए पूंजीगत खर्च में वृद्धि और फ्रीबीज से बचने के उपायों पर बजट में ध्यान दिया जाएगा। विकास को सुनिश्चित करने के लिए आधारभूत ढांचे को मजबूत बनाना आवश्यक है। इसके लिए सड़क, रेलवे, उड्डयन सेवा, पोर्ट, परिवहन, शहरी विकास आदि को मजबूत बनाने के उपायों को बजट में प्राथमिकता दी जा सकती है। विगत वर्ष आयकर के स्लैब को समीचीन बनाने का प्रयास किया गया था, जिससे सामान्यजन को राहत मिली थी। इस दिशा में कुछ और राहतें दी जा सकती हैं। वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) के स्लैब को युक्तिसंगत बनाने से आर्थिक गतिविधियों में तेजी आई है। इसलिए जीएसटी और कॉर्पोरेट कर को और भी सुसंगत बनाया जा सकता है।

नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने और बायोफ्यूल तथा न्यूक्लियर ऊर्जा में निवेश को बढ़ाने पर बजट में घोषणा की जा सकती है। डिजिटल और डिजिटल सार्वजनिक आधारभूत ढांचा (डीपीआई), डिजिटल भुगतान, ई-गवर्नेंस, एआई आदि में निवेश बढ़ाने के प्रावधान किए जा सकते हैं।

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) को मजबूत बनाने पर विशेष जोर दिया जा सकता है ताकि आर्थिक गतिविधियों में तेजी आए, रोजगार सृजन में वृद्धि हो और लोग आत्मनिर्भर हो सकें आदि। इसके अतिरिक्त आसान ऋण की उपलब्धता हो, जोखिम प्रबंधन और रियायती सुविधाओं पर जोर, वित्तीय समावेशन, कौशल विकास आदि पर जोर दिया जा सकता है। बैंक जमा पर कर राहत दी जा सकती है ताकि लोग फिर से बैंक उत्पादों में निवेश करना शुरू करें। इससे बैंकों को सस्ती दर पर पूंजी मिलेगी। फलतः बैंक सस्ती दर पर जरूरतमंदों को ऋण उपलब्ध करा सकेंगे। कर्ज वसूली कानूनों को और भी मजबूत बनाने सम्बंधी प्रावधानों को भी बजट में शामिल किया जा सकता है ताकि बैंकों का बैलेंस शीट और भी मजबूत बन सके।

शिक्षा के क्षेत्र में कौशल विकास, तकनीकी प्रशिक्षण, उच्च शिक्षा संस्थानों की संख्या एवं उनकी क्षमता में विस्तार और स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में सुविधाओं को बढ़ाने पर भी जोर दिया जा सकता है। वर्तमान भू-राजनीतिक तनाव वाली स्थिति में रक्षा क्षेत्र को मजबूत बनाना आवश्यक है। इसलिए देश के सुरक्षा तंत्रों को मजबूत बनाने के लिए बजटीय प्रावधान किए जा सकते हैं।

बजट में कृषि और ग्रामीण विकास के लिए आवंटन बढ़ाया जा सकता है ताकि किसानों को अधिक संसाधन मिल सकें। सरकार कृषि को विकास का इंजन बनाना चाहती है। इसलिए बजट में तकनीक आधारित खेती-किसानी, भंडारण, मंडी और बाजार की आधारभूत सुविधाओं में सुधार, कृषि निर्यात के लिए कर प्रोत्साहन, उन्नत बीज और कीटनाशक नीतियों के समर्थन आदि से सम्बंधित विशेष प्रावधान किए जा सकते हैं।

■■■

50+ YEARS OF MOMENTUM
अर्थ सहकारेण कल्याणम्
दि कल्याण जनता सहकारी बँक लि.
मल्टी-स्टेट शेड्युल्ड बँक
सोने तारण कर्ज
जलद कर्ज
कमी प्रक्रिया शुल्क
व्याजदर
९.५०%* वार्षिक
* अटी व शर्ती लागू
TOLL FREE: 1800 233 1919
kalyanjanata.in
KJSBank

आंखों में तैरता आक्रोश

अपराध

मुम्बई लोकल में यात्रा करने वाले यात्री कभी सुखद यात्रा की कामना नहीं कर सकते हैं- विशेषकर जब कार्यालय पहुंचने की जल्दबाजी हो और एकदम 'पीक ऑवर' हो तो बिल्कुल नहीं। लोकल ट्रेन में खचाखच भरे हुए यात्री को गतंव्य तक पहुंच कर मानो ऐसा प्रतीत होता है कि वो एक बड़ी जंग जीत कर आया हो। कार्यालय पहुंचने की जल्दबाजी, कार्यालय की राजनीति, घर की जिम्मेदारी ये सब तो सामान्य समस्याएं हैं, लेकिन क्यों लोग मुम्बई लोकल में हो रही छोटी-छोटी बातों को लेकर तिलमिला उठते हैं? क्यों बात-बात पर आक्रोश की चिंगारी भड़क उठती है? आखिर ये किस मानसिकता का परिचायक है? विगत 24 जनवरी को लोकल ट्रेन से यात्रा करने के दौरान प्रो. आलोक कुमार सिंह व एक अन्य यात्री ओंकारनाथ शिंदे से मालाड स्टेशन पर उतरते समय कहा-सुनी हो गई। बस फिर क्या ओंकारनाथ शिंदे ने गुस्से में आकर उन पर धारधार हथियार से वार कर दिया। प्रो. आलोक कुमार सिंह को आनन-फानन में अस्पताल पहुंचाया गया जहां उनकी मौत हो गई। विगत कुछ वर्ष पहले टिटवाला लोकल ट्रेन में 34 वर्षीय मनीष सिंह को दो युवकों ने पीट-पीट कर अधमरा किया, बाद में उनकी मौत हो गई। लोकल ट्रेन में सीट को लेकर उठे विवाद में ही दो युवकों ने परमेश्वर नामक मजदूर को सानपाड़ा स्टेशन के पास चलती ट्रेन से बाहर फेंक दिया। कुछ माह पूर्व कल्याण स्टेशन पर ही मराठी भाषा नहीं बोलने के विवाद में एक युवक को पीटा गया, बाद में उस युवक ने घर जाकर आत्महत्या कर ली।

मामूली बातों को लेकर लोगों में आक्रोश की चिंगारी भड़क रही है और बदले की भावना से जहां उनकी मानसिकता आतंकी हो जाती है वहीं वे एक-दूसरे के जान पर वार करने से भी नहीं डरते हैं। जो उनकी विकृत मानसिकता व वीभत्स चेहरे को दर्शाते हैं।

आखिर मामूली कहा-सुनी या विवादों को लेकर क्यों लोग इतना जघन्य अपराध करते हैं? बात-बात पर उनकी त्योरियां चढ़ जाती है और गाली की बौछार शुरु हो जाती है? इस अपराध के पीछे उनकी क्या मनोवृत्ति है? एक ओर आधुनिकता की चकाचौंध, दौड़ती-हांफती जिंदगी, पैसे बटोरने की ललक, प्रतिस्पर्धा, सोशल मीडिया का दुष्प्रभाव, बिखरता परिवार, संवेदना की कमी, संस्कार का अभाव, नशे की लत अन्य कोई गलत आदत या संगत आदि कई ऐसे कारण हैं जिससे लोगों की मानसिकता विकृत हो रही है। असहनशीलता विशेषकर युवाओं में देखी जा रही है जिसके उक्त सभी कारण हैं।

आजकल परिवार में माता-पिता दोनों कामकाजी होते हैं, पैसे कमाने की होड़ में वे बच्चों को नैतिक शिक्षा नहीं दे पा रहे हैं। संयुक्त परिवार लगभग समाप्त हो गए हैं तो बच्चों का जुड़ाव परिवार से नहीं हो पा रहा है, ऐसे में संवेदनशीलता का पाठ वो नहीं सीख पाते। दादा-दादी के संस्कार से वो वंचित हो रहे हैं, ऐसे में वो कहां सीखेंगे नैतिकता, सहनशीलता और आधारभूत शिक्षा। बात केवल लोकल ट्रेन में संवेदनहीनता या आक्रामकता की नहीं है बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में ये देखने को मिल रहा है। कई ऐसे उदाहरण समाज में मिल जाएंगे जहां मानवता, संवेदना व नैतिकता तार-तार हो जाती हैं और लोगों का वीभत्स चेहरा सामने आ जाता है। मामूली डांट पर बच्चे अभिभावकों के जान के प्यासे होते जा रहे हैं, जो समाज व देश के लिए चिंतनीय होता जा रहा है। महाराष्ट्र में भाषा की राजनीति गरमाती दिख रही है, लोग भाषा को लेकर इतने आक्रामक हो गए हैं कि भाषा की आड़ में वे अपना आतंकी मानसिकता दर्शाते हैं। भाषा विवाद की चिंगारी भड़का कर नेता राजनीति रोटियां सेंकने लगे और युवा मन इसे अस्मिता का विषय समझ कर भ्रमित होते जा रहे हैं। अन्य चिंताओं के साथ 'अस्मिता' आग में घी डालने का काम करती है और लोगों को अपनी भड़ास निकालने का बहाना मिल जाता है जबकि वास्तविक रुप से समस्या उनकी अपनी मानसिकता में है। यदि यह बाद समझ ली जाए और उस पर सकारात्मक काम किया जाए तो इन घटनाओं में कमी आने की सम्भावनाएं बढ़ जाएंगी।

■■■

स्निग्धा अवतंस

बुधरी ताती

श्री हरिचरण सैकिया

इंद्रजीत सिंह सिद्धू

सुश्री अरमिडा फर्नांडीज

बृज लाल भट

एस.के.एम. मैइलानंदन

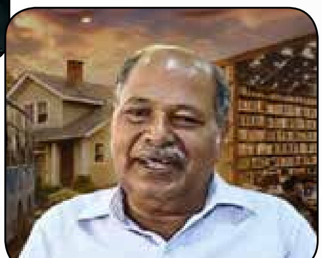

अंके गौड़ा

भारत सरकार द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में असाधारण योगदान के लिए राष्ट्रीय पुरस्कारों की घोषणा की जाती है। वर्ष 2026 में कुल 131 पद्म पुरस्कार, 5 पद्म विभूषण, 13 पद्म भूषण और 113 पद्मश्री पुरस्कारों की घोषणा की गई।

परदे के पीछे के नायक

भारत सरकार द्वारा प्रत्येक वर्ष गणतंत्र दिवस के अवसर पर घोषित होने वाले पद्म पुरस्कार देश के उन असाधारण व्यक्तियों को सम्मानित करते हैं जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में असाधारण योगदान दिया हैं। 2026 में कुल 131 पद्म पुरस्कार घोषित किए गए, जिनमें 5 पद्म विभूषण, 13 पद्म भूषण और 113 पद्मश्री शामिल हैं। इनमें से पद्म श्री श्रेणी के कई प्राप्तकर्ता ऐसे 'अनसंग हीरोज' हैं जो ग्रामीण, आदिवासी, वंचित और स्लम क्षेत्रों में जमीनी स्तर पर समाजसेवा कर रहे हैं। यहां हम पद्म श्री 2026 के कुछ चुनिंदा प्राप्तकर्ताओं की कहानियां साझा कर रहे हैं, जो मुख्य रूप से सामाजिक कार्य क्षेत्र से जुड़े हैं और समाज के सबसे निचले तबके तक पहुंचकर बदलाव लाए हैं।

आशीष कुमार 'अंशु'

बृज लाल भट: जम्मू-कश्मीर में सद्भावना के सेतु

बृज लाल भट को पद्म श्री से सम्मानित किया गया है। कश्मीरी पंडित समुदाय से सम्बंध रखने वाले भट बागवानी (मार्केटिंग एंड प्लानिंग) विभाग के डायरेक्टर पद से रिटायर हुए। रिटायरमेंट के बाद भट स्वामी विवेकानंद सेंटर, कन्या कुमारी के कार्यकर्ता बन गए। केंद्र ने उन्हें कश्मीर घाटी के अनंतनाग जिले के अचबल क्षेत्र में स्थित अपने

नागदंडी आश्रम में काम करने के लिए नियुक्त किया। स्थानीय किसानों को आधुनिक तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित करने के लिए अपनी जमीन पर सेब का बागान विकसित किया। इस प्रक्रिया में भट ने कश्मीर की बंजर जमीन को ज्यादा उपज देने वाले सेब और अखरोट के बागों में बदलवा दिया। इससे स्थानीय किसानों की आय में बढ़ोतरी हुई।

बुधरी ताती: बस्तर के आदिवासियों की बड़ी दीदी

बुधरी ताती, छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा जिले के हिरनार गांव से हैं, जो नक्सल प्रभावित दक्षिण बस्तर क्षेत्र में आता है। इस साल पद्म श्री से सम्मानित होने वाली वे एक अनोखी और प्रेरणादायक महिला हैं। उन्होंने पिछले 36 से 40 साल से ज्यादा समय तक अबूझमाड़ जैसे खतरनाक और पिछड़े नक्सल क्षेत्र में सामाजिक काम किया है।

स्थानीय लोग उन्हें प्यार से 'बड़ी दीदी' कहते हैं, जैसे कोई बड़ी बहन जिसका सब सम्मान करते हैं। उनका पूरा ध्यान लड़कियों, महिलाओं और बुजुर्गों को मजबूत बनाने पर रहा है- ऐसे क्षेत्रों में जहां हिंसा और गरीबी के कारण सपने भी दब जाते हैं। बुधरी दीदी का काम बहुत मेहनत वाला और जमीनी है। वे महिलाओं को सिलाई सिखाने के कार्यक्रम चलाती हैं ताकि वे खुद आत्मनिर्भर बन सकें। अब तक 500 से ज्यादा महिलाओं ने उनके जरिए सिलाई सीखी और कपड़े सिलकर अपनी कमाई शुरू की।

सुश्री अरमिडा फर्नांडीज: मुंबई स्लम की मां

83 साल की डॉ. आर्मिडा फर्नांडिस कर्नाटक से हैं और इस साल पद्म श्री से सम्मानित हो रही हैं। वे मुम्बई में रहती हैं। नवजात शिशु चिकित्सा (नीओनेटोलॉजी) की क्षेत्र में उन्हें 'भारतीय नीओनेटोलॉजी की मां' कहा जाता है क्योंकि उन्होंने शिशु देखभाल में क्रांति लाई है। 1989 में उन्होंने मुम्बई के सायन हॉस्पिटल (लोकमान्य तिलक म्युनिसिपल जनरल हॉस्पिटल) में एशिया का पहला मानव दूध बैंक शुरू किया। यह बहुत बड़ा बदलाव लाया- जब मां अपना दूध नहीं दे पाती थीं तो समय से पहले पैदा हुए या कमजोर शिशुओं को दान किया हुआ मां का दूध मिलता था, जिससे शिशु मृत्यु दर बहुत कम हुई।

अंके गौड़ा : बस कंडक्टर से पुस्तकों के संग्राहक की यात्रा

कर्नाटक के मांड्या जिले के एक छोटे से गांव हरलहल्ली में आज देश-दुनिया के शोधकर्ता, छात्र और लेखक खींचे चले आ रहे हैं। इस छोटे से गांव को 'ज्ञान की राजधानी' बनाने का श्रेय जाता है 75 वर्षीय अंके गौड़ा को, जिन्होंने अकेले दम पर लगभग 20 लाख (2 मिलियन) किताबों का एक विशाल निजी पुस्तकालय खड़ा कर दिया है। उनकी इस निस्वार्थ सेवा और साहित्य के प्रति अटूट प्रेम को देखते हुए भारत सरकार ने उन्हें पद्म श्री सम्मान से सम्मानित किया है।

श्री हरिचरण सैकिया: असम के सत्तरीया नृत्य के वयोवृद्ध विशेषज्ञ

सत्तरीया नृत्य के वयोवृद्ध विशेषज्ञ हरिचरण सैकिया को इस साल पद्म श्री से सम्मानित किया है। उन्होंने असम की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने में जीवनभर योगदान दिया। इस सम्मान पर उन्होंने आभार जताया और कहा कि यह उनके गुरुओं और उस कला रूप को समर्पित है, जिसकी सेवा उन्होंने दशकों तक की। आज भी 96 साल की उम्र में वे सत्तरीया सिखाते हैं और नई पीढ़ी को तैयार कर रहे हैं।

इंद्रजीत सिंह सिद्धू: चंडीगढ़ की सड़कों का रिटायर्ड आईपीएस सफाईवाला

इंद्रजीत सिंह सिद्धू को पद्म श्री से सम्मानित किया गया है सामाजिक कार्य के लिए। रिटायरमेंट के बाद प्रायः लोग आराम की जिंदगी चुनते हैं और घूमने फिरने, पूजा या दूसरे कामों में अपना समय व्यतीत करते हैं, लेकिन 88 साल की आयु में रिटायर्ड आईपीएस इंद्रजीत सिद्धू ने समाज सेवा का रास्ता अपनाया।

एस.के.एम. मैइलानंदन: तमिलनाडु के समर्पित सेवक

ईरोड स्थित एसकेएम ग्रुप ऑफ कम्पनीज के कार्यकारी अध्यक्ष एसकेएम मैलानंदन को आध्यात्मिक शिक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य और सामाजिक कल्याण में उनके योगदान के लिए पद्म भूषण 2026 के लिए चुना गया है। 1983 में उन्होंने पोल्ट्री फार्मर्स वेलफेयर एसोसिएशन की स्थापना की और इसके संस्थापक अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। उन्होंने एक आधुनिक ग्रामीण विपणन प्रणाली की शुरुआत की, जिसका पालन आज भी व्यापारी करते हैं।

■■■

संघ का वनवासी समाज से संवाद

संघ की मूल वैचारिक मान्यता यह है कि भारत एक सांस्कृतिक राष्ट्र है और इसकी आत्मा विविधताओं में निहित एकता में है। संघ वनवासी शब्द सम्बोधित करता है, जिससे यह संदेश जाता है की यह शहरी समाज से अलग नहीं बल्कि प्रकृति-आधारित जीवन का संरक्षक है।

सामाजिक समरसता

श्रीगुरुजी ने कहा था कि हिंदुओं से जनजातियों के अलगाव का समर्थन करने वाले लोग तर्क देते हैं कि वे हिंदू धर्म की पूजा पद्धति नहीं मानते बल्कि प्रकृति की पूजा करते हैं। इस कारण वे हिंदू नहीं है, ऐसा कहने वाले हिंदुत्व के स्वाभाविक ज्ञान से भी पूरी तरह अनभिज्ञ हैं। भारतीय समाज की बहुलतावादी संरचना में आदिवासी समाज का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह समाज न केवल भारत की प्राचीनतम सांस्कृतिक परम्पराओं का वाहक है बल्कि प्रकृति, पर्यावरण और सामुदायिक जीवन-दर्शन का जीवंत उदाहरण भी प्रस्तुत करता है।

स्वतंत्रता के बाद के दशकों में आदिवासी समाज राजनीतिक उपेक्षा, आर्थिक शोषण, सांस्कृतिक विघटन और धार्मिक हस्तक्षेप जैसी अनेक चुनौतियों से घिरा रहा। ऐसे में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा आदिवासी समाज से निरंतर संवाद और सीधा सम्पर्क स्थापित करने के प्रयासों को सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में समझना आवश्यक हो जाता है।

सचिन तिवारी

स्वतंत्रता के बाद आदिवासी समाज मुख्यतः दो वैचारिक धाराओं के प्रभाव में रहा है, एक ओर वामपंथी एवं मिशनरी प्रभाव, दूसरी ओर राष्ट्रवादी-सांस्कृतिक संगठनों की सक्रियता। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने आदिवासी समाज को हाशिए का समुदाय नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति की जड़ के रूप में प्रस्तुत करते हुए उनसे निरंतर संवाद स्थापित करने का प्रयास किया है। यह संवाद केवल सांस्कृतिक नहीं बल्कि सामाजिक, वैचारिक और राजनीतिक भी है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ समय-समय पर आदिवासी समुदायों के साथ संवाद स्थापित करने के कार्यक्रम आयोजित करता रहा है। हाल ही में पू. सरसंघसंचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने झारखंड के रांची में आदिवासी प्रतिनिधियों के साथ संवाद कार्यक्रम किया, जिसमें उन्होंने आदिवासी समुदाय को हमारे धर्म का मूल बताकर एक सकारात्मक संदेश देने का प्रयास किया। उनका कहना था कि आदिवासी और हिंदू समाज अलग नहीं हैं और विविध पूजा-पद्धतियों में भी एकता है।

संघ एवं उसकी सहायक संस्थाएं जैसे वनवासी कल्याण आश्रम एवं सेवा भारती आदिवासी क्षेत्रों में संस्कृति संरक्षण को ध्यान में रखते हुए अनेक कार्यक्रम आयोजित कर रही हैं। सांस्कृतिक संरक्षण यात्राओं के माध्यम से आदिवासी बहुल राज्यों में स्थानीय परम्पराओं, रीति-रिवाजों और त्योहारों को आयोजित किया जाता है, जिनका उद्देश्य आदिवासी युवाओं में अपनी सांस्कृतिक पहचान के प्रति गर्व जगाना है। नेतृत्व शिविर व प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं हस्तशिल्प और पारम्परिक कला प्रदर्शनियां आयोजित की जाती हैं ताकि भारत के अन्य हिस्सों में भी आदिवासी कला-

संस्कृति की जानकारी बढ़े और छोटे कारीगरों को लाभ मिल सके।

एकल शिक्षक विद्यालय, छात्रावास (आदिवासी बालक-बालिकाओं के लिए) एवं संस्कार केंद्र एवं कोचिंग केंद्र के माध्यम से शिक्षा के साथ-साथ संस्कार शिक्षा, भारतीय संस्कृति, रामायण-महाभारत की कथाएं और राष्ट्रभावना का समावेश किया जाता है। पूरे देश में एकल विद्यालयों के संचालन के माध्यम से जनजातीय क्षेत्रों में ईसाई मिशनरियों के प्रभाव को कम करने तथा बच्चों को उचित शिक्षा एवं संस्कार देने का कार्य किया जा रहा है। झारखंड, छत्तीसगढ़, मध्य भारत, ओडिशा, महाराष्ट्र और गुजरात जैसे क्षेत्रों में संघ और उससे प्रेरित संगठनों ने आदिवासी समाज के साथ सीधा संवाद स्थापित करने के लिए दीर्घकालिक सामाजिक कार्य किया है। सेवा भारती भी शिक्षा, संस्कार, सामाजिक जागरूकता, स्वरोजगार धर्म-परिवर्तन रोकने आदि कार्यों के माध्यम से आदिवासी क्षेत्रों में पूर्णनिष्ठा के साथ कार्य कर रही है। आर्थिक स्वावलम्बन हेतु स्वयं सहायता समूह, पारम्परिक हस्तशिल्प प्रशिक्षण एवं कृषि-आधारित परियोजनाएं भी संघ द्वारा इन क्षेत्रों में संचालित की जा रही हैं, इससे आदिवासी समाज को आर्थिक रूप से मजबूत करने के साथ-साथ संघ समर्थित संगठनों पर उनकी निर्भरता भी बढ़ती है।

संघ आदिवासी क्षेत्रों में ईसाई मिशनरियों की गतिविधियों को लम्बे समय से चुनौती देता रहा है। संघ का तर्क है कि धर्मांतरण से आदिवासी समाज अपनी सांस्कृतिक जड़ों से कटता है। यह सामाजिक विभाजन और राजनीतिक अस्थिरता को जन्म देता है। धर्मांतरण को रोकने के लिए संघ तथा वनवासी कल्याण आश्रम, धर्मांतरण विरोधी अभियान, घर वापसी कार्यक्रम तथा धर्मांतरण कानूनों के समर्थन में जनजागरण का कार्य कर रहा है। धर्मांतरण को संघ धार्मिक स्वतंत्रता का नहीं बल्कि सांस्कृतिक अस्तित्व का प्रश्न मानता है। पहचान का मुद्दा भी आदिवासी समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। औपनिवेशिक काल से ही आदिवासियों को पिछड़ा, असभ्य या मुख्य समाज से अलग के रूप में देखने की प्रवृत्ति रही है। स्वतंत्र भारत में भी यह मानसिकता पूर्णतः समाप्त नहीं हो सकी। संघ के संवाद का एक केंद्रीय उद्देश्य इस हीनभावना को दूर करना रहा है। आदिवासी वीरों, स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान और उनके सामाजिक मूल्यों को सामने लाकर यह स्थापित किया गया कि आदिवासी समाज भारतीय इतिहास और राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया का सक्रिय भागीदार रहा है। बिरसा मुंडा, रानी दुर्गावती जैसे नायकों का स्मरण, इसी पहचान-बोध को सुदृढ़ करता है। ■■■

फिल्म समीक्षा

शौर्य की कहानी बॉर्डर-2

बॉर्डर-2 एक देशभक्ति फिल्म है। यह फिल्म देश के प्रति लोगों की भावनाएं, सैनिकों के प्रति सम्मान और साहस की कहानी को बड़े पर्दे पर एक संतुलित तरीके से दर्शाती है। 1971 के भारत-पाक युद्ध की कुछ सच्ची घटनाओं को अपनी कुछ कल्पनाओं के साथ जोड़कर इस फिल्म की कहानी लिखी गई है।

भारतीय सिनेमा का एक बड़ा दर्शक वर्ग है जो सलीके से बनी युद्ध कथाओं या यूं कहें कि देश भक्ति से ओत-प्रोत विषयों पर आधारित फिल्मों को अपना प्यार और समर्थन देता है। 'धुरंधर' की उत्कृष्ट सफलता के बाद अभी हाल ही में प्रदर्शित 'बॉर्डर-2' ने बॉक्स ऑफिस को हिला कर रख दिया है। सनी देओल (फिल्म में 'धर्मेंद्र का बेटा' नाम से टाइटल दिया गया है), वरूण धवन, दिलजीत दौसांझ, अहान शेट्टी की मुख्य भूमिकाओं से सजी इस फिल्म का निर्देशन किया है अनुराग सिंह ने। कुछ लोगों को लगता है कि 'बॉर्डर 2', 1997 में प्रदर्शित जेपी दत्ता द्वारा निर्देशित 'बॉर्डर' का सीक्वल है, पर ऐसा नहीं है।

'बॉर्डर 2' एक अलग ही फिल्म है। इसकी कहानी लिखी है जेपी दत्ता की बेटी निधी दत्ता ने। निधी ने 1971 के भारत-पाक युद्ध की कुछ सच्ची घटनाओं को अपनी कुछ कल्पनाओं के साथ जोड़कर इस फिल्म की कहानी लिखी है। जिसमें अपने स्क्रीनप्ले और संवादों से जान डाली है अनुराग सिंह और सुमित अरोड़ा ने। यदि कहानी, पटकथा और संवादों की लड़ी खूबसूरत बन जाए तो किसी फिल्म को सफल होने से कोई नहीं रोक सकता। 'बॉर्डर 2' इस मोर्चे पर जीत प्राप्त करती है। फिल्म के संवाद कई जगह दर्शकों के दिल को छू जाते हैं।

केसरी के बाद अनुराग सिंह की ये दूसरी फिल्म है। आर्मी, नेवी और एयरफोर्स के तीन अफसरों, वरुण धवन, अहान शेट्टी और दिलजीत दौसांझ के साथ सनी देओल की कहानी को एक सूत्र में पिरोया है अनुराग सिंह ने। भारतीय सेना के शौर्य को दर्शाती ये फिल्म उन अनेक ज्ञात-अज्ञात युद्ध नायकों को सच्ची श्रृद्धांजलि अर्पित करती है जिन्होंने भारत माता की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहूति दे दी। 'बॉर्डर 2' की सफलता में इसके पात्रों के चयन ने भी प्रमुख भूमिका निभाई है। सही कलाकारों के चयन ने, उनके अभिनय ने फिल्म को एक नई ऊंचाई दी है। सनी देओल इस तरह की भूमिकाओं में जान डाल देते हैं। उनके प्रशंसकों को ऐसी भूमिकाएं बेहद पसंद आती हैं और वो उन्हें निराश भी नहीं करते। 'गदर 2', 'जाट' की सफलता के बाद 'बॉर्डर 2' की सफलता ये बताती है कि सनी पाजी का कोई जवाब नहीं। फिल्म में अपने अभिनय से वरुण धवन दर्शकों को प्रभावित करते हैं। दिलजीत दौसांझ की अपनी फेन फॉलोइंग है और वो अपने किरदार में जमते है। अहान शेट्टी अवश्य एक कमजोर कड़ी हैं, लेकिन बाकी अभिनेताओं ने फिल्म को सम्भाल लिया है इसलिए वो भी निकल जाते हैं। इसके साथ ही अन्य प्रमुख भूमिकाओं में सनी के साथ बने अनुराग अरोड़ा, सनी की पत्नी के किरदार में मोना सिंह, दिलजीत की पत्नी के किरदार में सोनम बाजवा, वरुण की पत्नी के किरदार में मेघा राणा ने इस फिल्म में अपना प्रभाव छोड़ा है।

अतुल गंगवार

'बॉर्डर' की सफलता में फिल्म के गीत संगीत का बहुत योगदान था। 'संदेशे आते हैं हमें तड़पाते है'... गीत प्रत्येक जवान के दुख-दर्द को व्यक्त करता था, जिसने दर्शकों के दिलों को छुआ था। 'बॉर्डर 2' का संगीत उस स्तर पर तो नहीं पहुंच पाया है, लेकिन फिर भी सुनने योग्य है। ■■■

TJSB SAHAKARI BANK LTD.
MULTI-STATE SCHEDULED BANK
Bharose ka Bank Bhavishya ka Bank
Need funds, fast?
With TJSB Personal Loan help is just a few steps away.
BANK LOAN APPLICATION
APPROVED
Get a Personal Loan with a simple process, minimal paperwork, & quick disbursal.
Up to
₹5 Lakhs
For salaried, professionals & businessmen
*T&C Apply
www.tjsb.bank.in | : 022-48897204

टेलीकॉम न हो एकाधिकार

ललित गर्ग

मोनोपोली केवल बाजार की समस्या नहीं, यह उपभोक्ता अधिकारों, सामाजिक संतुलन और लोकतांत्रिक मूल्यों की भी चुनौती है। यदि भारत को सचमुच नया और विकसित राष्ट्र बनाना है, तो एकछत्र राज नहीं बल्कि स्वस्थ प्रतिस्पर्धा और उपभोक्ता-सम्मान को ही विकास की रीढ़ बनाना होगा।

एयरलाइंस की तरह नेटवर्किंग में भी मोनोपोली यानी एकाधिकार का बढ़ना उपभोक्ताओं के लिए बड़े संकट का संकेत है। व्यवसाय, उद्योग और सेवा क्षेत्र में मोनोपोली यानी एकाधिकार की स्थिति कोई नई परिघटना नहीं है। इतिहास साक्षी है कि जब-जब किसी एक या दो कम्पनियों ने किसी क्षेत्र में अपना एकछत्र वर्चस्व स्थापित किया है, तब-तब उपभोक्ता सबसे बड़ा शिकार बना है। प्रतिस्पर्धा के अभाव में कीमतें बढ़ी हैं, सेवाओं की गुणवत्ता गिरी है, मनमानी शर्तें थोपी गई हैं और उपभोक्ता की आवाज कमजोर पड़ी है। आज भारत में एयरलाइंस और टेलीकॉम (नेटवर्किंग) सेक्टर इसी संकटपूर्ण मोड़ पर खड़े दिखाई देते हैं।

एयरलाइंस सेक्टरः इंडिगो का एकछत्र वर्चस्व

भारतीय विमानन क्षेत्र में कभी समय था जब अनेक घरेलू एयरलाइंस सक्रिय थीं-जेट एयरवेज, किंगफिशर, स्पाइसजेट, गो एयर, एयर डेक्कन जैसी कम्पनियों के बीच कड़ी प्रतिस्पर्धा थी। किराए अपेक्षाकृत नियंत्रित रहते थे, यात्रियों के पास विकल्प थे और सेवाओं में सुधार का दबाव कम्पनियों पर बना रहता था, किंतु धीरे-धीरे बाजार सिमटता गया, आर्थिक कुप्रबंधन, नीतिगत चुनौतियां और प्रतिस्पर्धी दबाव के चलते कई एयरलाइंस बंद हो गईं या कमजोर पड़ गईं। आज स्थिति यह है कि इंडिगो ने घरेलू विमानन बाजार में लगभग एकछत्र प्रभुत्व स्थापित कर लिया है। परिणाम सामने हैं- त्योहारों, आपात स्थितियों या सीमित उड़ानों के समय टिकट दरें आसमान छूने लगती हैं। उपभोक्ता मजबूर हैं क्योंकि विकल्प सीमित हैं। शिकायतों पर सुनवाई कमजोर है और सेवा गुणवत्ता में गिरावट की शिकायतें आम हो चली हैं। यह स्पष्ट संकेत है कि मोनोपोली उपभोक्ता हितों के लिए कितनी घातक हो सकती है।

नेटवर्किंग सेक्टरः वही राह दोहराने का संकट

आज टेलीकॉम या नेटवर्किंग सेक्टर में एयरटेल, जियो और वीआई (वोडाफोन-आइडिया) ही प्रमुख खिलाड़ी बचे हैं। एक समय बीएसएनएल, एमटीएनएल, रिलायंस कम्युनिकेशंस, टाटा टेलीसर्विसेज, एयरसेल जैसी कम्पनियां भी बाजार में थीं। प्रतिस्पर्धा तीव्र थी, उपभोक्ताओं को सस्ते प्लान, बेहतर ऑफर्स और नवाचार मिलते थे। जियो के आगमन ने एक बार फिर क्रांतिकारी बदलाव लाया- डाटा सस्ता हुआ, इंटरनेट जन-जन तक पहुंचा, लेकिन अब परिदृश्य बदलता दिख रहा है। धीरे-धीरे टैरिफ बढ़ रहे हैं, वैकल्पिक कम्पनियां कमजोर होती जा रही हैं और बाजार कुछ गिने-चुने हाथों में सिमटता जा रहा है। यदि आने वाले समय में ये कम्पनियां भी एयरलाइंस की तरह आपसी 'समझ' के साथ कीमतें बढ़ाने लगीं और सेवाओं में मनमानी करने लगीं तो उपभोक्ता के पास जाने के लिए कोई ठिकाना नहीं बचेगा। प्रश्न सीधा है- उपभोक्ता आखिर जाएगा कहां?

मोनोपोली का मूल स्वभाव ही उपभोक्ता विरोधी एवं उनका शोषण करना होता है। कीमतों में मनमानी वृद्धि और प्रतिस्पर्धा न होने से कम्पनियां मनचाही दरें तय करती हैं। सेवा गुणवत्ता में गिरावट एवं विकल्प न होने से उपभोक्ता शिकायत करे भी

तो इसका विशेष असर नहीं पड़ता। जब बाजार सुरक्षित हो जाता है तब नवाचार का दबाव समाप्त हो जाता है। दादागिरी और मनमानी शर्तें उपभोक्ताओं को 'लो या छोड़ दो' की स्थिति में धकेल देती है। व्यापार, उद्योग, तकनीक और सेवा क्षेत्रों में जब-जब एकछत्र राज्य की स्थापना हुई है, तब-तब मूल्य बढ़े हैं, वर्चस्व बढ़ा है और उपभोक्ता पिसता रहा है। यह आर्थिक सिद्धांत ही नहीं, व्यावहारिक अनुभव भी है।

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी और उपभोक्ता संरक्षण का विमर्श

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के शासनकाल में उपभोक्ता संरक्षण को लेकर लगातार बात की गई है। डिजिटल इंडिया, मेक इन इंडिया, स्टार्टअप इंडिया जैसे अभियानों के माध्यम से प्रतिस्पर्धा बढ़ाने और नए उद्यमों को अवसर देने की मंशा दिखाई देती है। उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम को भी मजबूत किया गया है। ई-कॉमर्स नियम बनाए गए हैं और शिकायत निवारण तंत्र को तकनीक से जोड़ा गया है, लेकिन व्यावहारिक धरातल पर बीते कुछ वर्षों में यह भी सच है कि व्यापार और उद्योग सीमित हाथों में सिमटते जा रहे हैं। बड़े कॉर्पोरेट और पूंजी-समर्थित कम्पनियां छोटे और मध्यम उद्यमों को निगलती चली जा रही हैं। एयरलाइंस और टेलीकॉम इसके जीवंत उदाहरण हैं। नीति-नियंत्रण और नियामक संस्थाओं की भूमिका पर भी प्रश्न उठने लगे हैं कि क्या वे समय रहते प्रतिस्पर्धा को बचाने में सफल हो पा रही हैं?

नए व्यापार की चुनौतियां और 'नया भारत'

'नया भारत', 'नया समाज' और 'विकसित राष्ट्र' का सपना तभी साकार हो सकता है जब बाजार में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा बनी रहे। नए व्यापार और स्टार्टअप तभी पनप सकते हैं जब प्रवेश की बाधाएं कम हों, नीतिगत समर्थन मिलें और बड़े खिलाड़ियों की मोनोपोली पर अंकुश लगे। यदि हर क्षेत्र कुछ चुनिंदा कम्पनियों के एकाधिकार (नियंत्रण) में चले गए तो रोजगार के अवसर घटेंगे, नवाचार रुकेगा और आर्थिक असमानता बढ़ेगी। नेटवर्किंग सेक्टर विशेष रूप से संवेदनशील है क्योंकि आज शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार, शासन और सामाजिक संवाद- सब कुछ इंटरनेट और नेटवर्क पर निर्भर हो चुका है। यहां मोनोपोली केवल आर्थिक नहीं, सामाजिक और लोकतांत्रिक संकट भी पैदा कर सकती है। ट्राई और प्रतिस्पर्धा आयोग जैसी संस्थाओं को और सक्रिय व स्वतंत्र बनाना होगा। प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने के लिए नए खिलाड़ियों के प्रवेश के लिए नीतिगत प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। सरकारी कम्पनियों का सशक्तिकरण हो, बीएसएनएल जैसी सार्वजनिक कम्पनियों को तकनीकी और वित्तीय रूप से मजबूत करना आवश्यक है। ■■■

जन्मदिन- 2 फरवरी

बहुमुखी प्रतिभा के धनी दादासाहब आप्टे का पूरा जीवन बहुआयामी, ऊर्जावान, जीवंत तथा उत्साही रहा, जो सबके लिए अनुकरणीय है। जीवन के प्रत्येक क्षण को उन्होंने अपनी प्रतिभा, ज्ञान और योग्यता से परिपूर्ण बनाया तथा राष्ट्र, देश, समाज को अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

बहु आयामी संघ प्रचारक दादासाहब आप्टे

बहुमुखी प्रतिभा के धनी, संघ प्रचारक दादासाहब आप्टे विधिवेत्ता, चित्रकार, छायाकार, पत्रकार, मराठी-हिंदी के कई पुस्तकों के लेखक, प्राच्य विद्या वेद-उपनिषदों के ज्ञाता थे।

एक व्यक्ति जो मुम्बई उच्च न्यायालय का सफल वकील था, अंग्रेजी सूट-बूट, टाई, हैट, पहने मुंह में सिगार दबाए न्यायालय के कामों को पूरा करने के बाद मुम्बई के शिवाजी पार्क में शांति की खोज में आकर बैठते हैं। संध्याकाल का समय है। उनके सामने ही कुछ दूरी पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सायं शाखा लगी है। तरुणों के खेलकूद, व्यायाम, सिटी के स्वरों पर योग, दंड प्रहार, सैनिक परेड आदि देखकर वे प्रभावित और आकर्षित होते हैं। उस शाखा पर नारायण राव तर्ते, बापूराव लेले तथा आबाजी थत्ते जैसे वरिष्ठ जनों के सम्पर्क में आते हैं तथा वे उनसे प्रभावित होकर 1944 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक बन जाते हैं। यहां से उनका जीवन ही बदल जाता है। इस व्यक्ति का पूरा नाम शिवराम शंकर (दादा साहब) आप्टे था।

दादा साहब आप्टे का जन्म 2 फरवरी 1905 में गुजरात राज्य के बड़ोदरा में हुआ था। जहां से उन्होंने प्राथमिक और विश्वविद्यालय की शिक्षा पूरी कीं। कानून विषय में एलएलबी करने के बाद वे मुम्बई आएं। संस्कृत स्कूल में अध्यापन कार्य करके अपनी पढ़ाई का खर्चा उठाया। उच्च न्यायालय में प्रतिष्ठित वकील बने। के.एम. मुंशी, फ़ाली नरीमन तथा मुहम्मद अली जिन्ना जैसे वकीलों के सहायक बने। कुछ समय वे एक अंग्रेजी पत्रिका में सम्पादक रहे। 2 वर्ष वे वीर सावरकर के घर पर भी रहे। अंग्रेजी समाचार भारतीय पक्ष के समाचारों की अनदेखी करते थे। सावरकर ने उन्हें भारतीय समाचार संस्था बनाने को कहा। काम सीखने के लिए रात की पाली में यू.पी.आई. नामक समाचार संस्था में काम किया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में आने के बाद उनका जीवन ही बदल गया। अंग्रेजी पहनावा त्याग कर वे पूर्ण भारतीय वस्त्र पहनने लगे। वे एक आदर्श संघ प्रचारक बन गए। राष्ट्र प्रथम की भावना प्रबल हो गई। संघ के दूसरे प.पू. सरसंघचालक श्रीगुरुजी की प्रेरणा से उन्होंने हिंदुस्थान समाचार न्यूज एजेंसी की स्थापना की, जो आज 15 भारतीय भाषाओं की सबसे बड़ी एजेंसी बन गई है। 1954 में उन्होंने अंग्रेजी टेलीप्रिंटर का एकाधिकार तोड़ते हुए स्वयं हिंदी का टेलीप्रिंटर विकसित किया। 1957 में एक सहकारी समिति बना कर एजेंसी के संचालन की स्थाई व्यवस्था की। 1948 में उन्होंने संघ और विद्यार्थी परिषद का विधान बनाया। वे विश्व हिंदू परिषद के संस्थापक महामंत्री थे। पुणे में बने वरिष्ठ वृद्ध प्रचारकों के निवास कौशिकाश्रम के लिए न्यास बनाया और उसी आश्रम में 10 अक्टूबर 1985 को अपना शरीर छोड़ा।

दादा साहब संघ विस्तार के लिए तमिलनाडु गए। 1974 के बाद कई वर्ष महामंडलेश्वर महास्वामी गंगेश्वरानंद उदासीन के साथ विश्व भ्रमण करके वेदों का प्रचार-प्रसार किया। वे लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के मराठी समाचारपत्र में नियमित लेख भेजा करते थे। उन्होंने संघ कार्य विस्तार के लिए गुजरात, महाराष्ट्र और दक्षिण के राज्यों में ठोस प्रयास किए।

■■■

अशोक कुमार सिन्हा

न सिगरेट, न तम्बाकू फिर भी कैंसर!

कुछ ऐसे खानपान और दिनचर्या की कुछ ऐसी आदते हैं, जिनके कारण लोग कैंसर जैसे घातक बीमारी की चपेट में आ जाते हैं। शराब, तम्बाकू व सिगरेट की आदत न होने के बाद भी कैसे लोग कैंसर से ग्रस्त होते हैं।

डॉ. धीरज फूलमती सिंह

कैंसर, किसी को डराने के लिए बस नाम ही काफी है। दुनियाभर में मौत के लिए दूसरा सबसे प्रमुख कारण कैंसर है। वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन के अनुसार आज के समय में प्रत्येक वर्ष 10 मिलियन कैंसर के नए मामले सामने आते हैं। क्या आप जानते हैं विश्व में इस समय कुल 4 करोड़ लोग कैंसर से ग्रस्त हैं? इनमें प्रत्येक वर्ष लगभग 1 करोड़ व्यक्ति और कैंसर से ग्रसित हो जाते हैं। प्रत्येक वर्ष अनुमानित 60 लाख व्यक्तियों की कैंसर के कारण मृत्यु हो जाती है। भारत की बात करूं तो यहां प्रत्येक 1 लाख की जनसंख्या पर 70 से 80 व्यक्ति कैंसर से पीड़ित हो जाते हैं।

भारत में कैंसर से मरने वाले व्यक्तियों में 34% लोग धूम्रपान, तम्बाकू, शराब के सेवन करने वाले होते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की माने तो आने वाले 5 वर्ष में विकासशील देशों में कैंसर के कारण होने वाले मृत्यु दर 25 लाख से बढ़कर 65 लाख तक होने की सम्भावना है। शरीर में होने वाली असामान्य और खतरनाक स्थिति, जिसमें कोशिकाओं की असामान्य वृद्धि होती है, उसे कैंसर कहते हैं। हमारे शरीर में कोशिकाओं का लगातार बंटवारा या कह लें- विभाजन होना एक सामान्य प्रक्रिया है। इस विभाजन पर शरीर का पूरा नियंत्रण रहता है, लेकिन जब किसी विशेष अंग की कोशिकाओं पर शरीर का नियंत्रण खो जाता है तो वे असामान्य रूप से बढ़ने लगती है और ट्यूमर का रूप ले लेती है, जिसे हम सामान्य भाषा में कैंसर कहते हैं। यह शरीर के किसी भी अंग में हो सकता है। सामान्य तौर पर कैंसर में होने वाले ट्यूमर दो तरह के होते हैं, पहला बिनाइन ट्यूमर और दूसरा मैलिग्नैंट ट्यूमर। मैलिग्नैंट ट्यूमर शरीर के दूसरे हिस्सों में फैलता है, जबकि बिनाइन नहीं फैलता है। हम सोचते हैं कि यदि बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू का सेवन नहीं करते हैं तो हमें कैंसर नहीं हो सकता है, जोकि सरासर हमारी गलत धारणा है और कुछ नही। आए दिन हम चाय पर चर्चा करते रहते हैं। दुनिया भर में सबसे ज्यादा चाय भारत में पी जाती है। यहां एक दिन में लोग कई-कई कप चाय पी जाते हैं। वैसे एक औसत व्यक्ति को दिन में केवल दो बार ही चाय पीनी चाहिए। चाय बिना दूध की हो तो और भी बेहतर है। 2 से ज्यादा चाय पीने वाले अधिकांश लोगों में अपच की शिकायत होती है और उनका पाचन खराब हो जाता है। यह आदत लगातार जारी रहने पर लत में बदल जाती है। इस कारण से अन्न नली में अल्सर की शिकायत उभर आती है। समय रहते इलाज ना होने पर यह कैंसर का रूप भी ले सकती है। हम भारतीय विशेषकर महिलाएं अपनी बीमारी को लेकर गैरजिम्मेदार हो जाती हैं। बहुत दिनों तक गॉल ब्लैडर की पथरी का इलाज ना हो तो भी यह कैंसर मे परिवर्तित हो सकती है। भारतीय परिस्थिति में महिलाओं में गॉल ब्लैडर का कैंसर सामान्य है।

भारतीय विशेषकर गांव-देहात के पुरूषों को नंगे या अंधनंगे बदन घूमने-फिरने और काम करने की आदत होती है। जिसके कारण वे सूर्य की कठोर व तेज प्रकाश के सीधे सम्पर्क में रहते हैं। भोर में सूर्य की किरणें भले विटामिन-डी का सबसे अच्छा श्रोत हो, पर चिलचिलाती धूप कैंसर का बहुत बड़ा कारण होता है। सूर्य की पराबैंगनी किरणों के कारण त्वचा का कैंसर होने की सम्भावना बहुत ज्यादा होती है। वहीं शहरी महिलाओं में प्रदूषण के कारण

भी त्वचा के कैंसर होने की सम्भावना बनी रहती है।

हम भारतीयों को तला-भूना और मसालेदार खाने की आदत होती है। हमें तीखे व्यंजनों के चटपटे स्वाद बहुत पसंद आते हैं। भोजन को तीखा और चटकदार बनाने के लिए हरी मिर्च या काली मिर्च का उपयोग बहुत अच्छा होता है, लेकिन यहीं यदि हम लाल सूखी मिर्च या उसके मोटे बुरादे का उपयोग करते हैं तो हम कैंसर को निमंत्रण दे रहे होते हैं।

शहरी लोग कामकाज की व्यस्तता के कारण समय बचाने के लिए रेडीमेड या प्रोसेस्ड फूड्स पर जोर रहता है। प्रोसेस्ड फूड्स भी शरीर में कैंसर विकसित का एक कारण हो सकता है। हम बचा-खुचा और बासी खाने को फेंकते नहीं हैं बल्कि उसे गरम करके खाते हैं। डायबिटीज में बासी रोटी खाने का बहुत लाभ बताया जाता है, यहां तक कि यूट्यूब पर बासी चावल से नए-नए व्यंजन बनाने के गुर सिखाए जाते हैं। आए दिन बासी भोजन करना भी कैंसर को आमंत्रित करने के लिए बहुत है। स्वभाव से आलसी होना, कम चलना-फिरना, काम कम करना इस कारण भी शरीर में सूजन हो जाती है जो प्राकृतिक मोटापा भले ना हो, पर मोटापा जैसा ही होता है तो यह शरीर में आंतों और स्तन कैंसर तत्वों को बढ़ा सकता है। असुरक्षित शारीरिक सम्बंध बनाने के कारण होने वाले कैंसर में भारत आज शीर्ष पर है। मल्टीपल पार्टनर्स के कारण केवल एड्स का ही नहीं बल्कि पुरुषों में शिश्न नली के कैंसर का भी डर होता है।

सामान्य तौर पर लोगों को खाने के बाद कुल्ला न करने की आदत होती है, अंदरूनी मुंह साफ नहीं रखते, मसूड़ों में सूजन और बदबू आती रहती है। लम्बे समय तक यह स्थिति मुंह के कैंसर का कारण बन सकती है। अनियंत्रित नाखून चबाने की आदत भी किसी को मुंह के कैंसर का मरीज बना सकती है। ज्यादातर लोग सोने से पहले इंटरनेट का उपयोग करने की बुरी आदत रखते हैं। फोन, कम्प्यूटर जैसे इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से निकलने वाली नीली रोशनी आंखों पर बुरा असर डाल सकती है। कुछ अध्ययनों में यह भी पाया गया है कि रात में किसी भी प्रकार की रोशनी कैंसर, मधुमेह, मोटापा और हृदय रोगों से जुड़ी हो सकती हैं।

जीवनशैली का हमारे स्वास्थ्य पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह का प्रभाव पड़ता है और यह हमारी आदतों पर निर्भर करता है। अच्छी आदतें रखने वाला व्यक्ति जीवन भर स्वस्थ रहता है, वहीं बुरी आदतों वाले लोग गम्भीर बीमारियों की चपेट में आ जाते हैं और उनका जीवन समय के साथ कम हो जाता है।

■■■

स्वयं के लिए और अपने परिजनों के लिए ग्रंथ का पंजीयन करें

इस ग्रंथ में आप पढ़ेंगे

- संघ में हो रहे अनगिनत सेवा कार्यों का परिणाम क्या है?
- डॉ. हेडगेवार जी से लेकर डॉ. मोहन भागवत जी तक के सभी सरसंघचालकों का दिशादर्शन...
- राजनीति को केंद्र में न रखकर राष्ट्रीयत्व को क्यों केंद्र में रखा?
- भारत के सम्मुख चुनौतियां और संघ कार्य का प्रभाव
- संघ विचारधारा और परिवर्तन

जैसे विविध मौलिक विषय

ग्रंथ का मूल्य ₹700/-

ईमेल – hindivivekvargani@gmail.com

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, Branch - Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

सम्पर्क प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483
भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करें और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

1985 में दूरदर्शन पर अनेक कलाकारों को मिलाकर बना कार्यक्रम 'देश-राग' बहुत लोकप्रिय हुआ था। सुरेश माथुर द्वारा लिखित गीत के बोल थे- 'मिले सुर मेरा तुम्हारा, तो सुर बने हमारा।' उगते सूर्य की लालिमा, सागर के अनंत विस्तार और झरनों के कलकल निनाद के बीच जो धीर-गम्भीर स्वर और चेहरा दूरदर्शन पर प्रकट होता था, वह था पंडित भीमसेन जोशी का। इस गीत की मूल धुन भी उन्होंने ही बनाई थी। राग भैरवी में निबद्ध इस गीत ने शास्त्रीय संगीत एवं भीमसेन को पूरे भारत में लोकप्रिय बना दिया।

भीमसेन जी का जन्म कर्नाटक के धारवाड़ जिले में स्थित एक छोटे नगर गडग में 4 फरवरी, 1922 को एक अध्यापक गुरुराज जोशी के घर में हुआ था। अपनी माता के भजन और दादाजी के कीर्तन सुनकर इनकी रुचि भी गीत और संगीत की ओर हो गई। एक बार गांव का एक दुकानदार 'किराना घराने' के संस्थापक अब्दुल करीम खां के कुछ रिकार्ड लाया। उन्हें सुनकर भीमसेन ने निश्चय कर लिया कि उन्हें ऐसा ही गायक बनना है। 1932 में गडग में अब्दुल करीम खां के शिष्य प्रसिद्ध गायक रामभाऊ कुंदगोलकर (सवाई गंधर्व) के कार्यक्रम से प्रभावित होकर बालक भीमसेन ने घर छोड़ दिया।

कई महीने तक खाली जेब, बिना टिकट घूमते हुए उन्होंने जालंधर, लखनऊ, रामपुर, कोलकाता, बीजापुर, ग्वालियर आदि में संगीत सीखा। इसके बाद वे भाग्यवश सवाई गंधर्व के पास ही पहुंच गए। सवाई गंधर्व ने इन्हें शिष्य बनाकर पूरे मनोयोग से गायन सिखाया। धीरे-धीरे गीत और संगीत भीमसेन के जीवन की साधना बन गई। 1946 में अपने गुरु सवाई गंधर्व के 60वें जन्मदिन पर पुणे में हुए कार्यक्रम से वे प्रसिद्ध हुए। फिर तो देश भर में इन्हें बुलाया जाने लगा। अब लोग इन्हें अब्दुल करीम खां और सवाई गंधर्व से भी बड़ा गायक मानने लगे, पर भीमसेन सदा विनम्र बने रहे। किराना घराना भावना प्रधान माना जाता है, पर भीमसेन ने उसमें शक्ति का संचार कर नया रूप दे दिया।

बहुभाषी भीमसेन मुख्यतः खयाल और भजन गाते थे। अभंग गाते समय वे मराठी, जोगिया राग गाते समय पंजाबी, वचन गाते समय कन्नड़भाषी और मीरा या सूर के पद गाते समय हिंदीभाषी लगते थे। उन्होंने हरिप्रसाद चौरसिया, पंडित रविशंकर तथा डॉ. बाल मुरलीकृष्ण जैसे श्रेष्ठ संगीतकारों के साथ जुगलबंदी की। शुद्ध कल्याण उनका सबसे प्रिय राग था। उन्होंने कई राग मिलाकर कलाश्री और ललित भटियार जैसे कुछ नए राग भी बनाए। उन्होंने कुछ फिल्मों में भी अपने गायन और संगीत विधा का प्रदर्शन किया। वे पुणे में अपने गुरु की स्मृति में प्रतिवर्ष सवाई गंधर्व महोत्सव करते थे। इसमें विख्यात और नए दोनों ही तरह के कलाकारों को बुलाया जाता था। विश्व पटल पर स्थापित ऐसे कई कलाकार हैं, जो इस समारोह से ही प्रसिद्ध हुए। इसमें पूरे महाराष्ट्र से श्रोता आते हैं। कई बार तो गायक के साथ संगत करने वाले को हल्का पड़ते देख भीमसेन स्वयं तानपूरा लेकर बैठ जाते थे। शास्त्रीय गायन के पर्याय पंडित भीमसेन को सैकड़ों पुरस्कार मिले। उन्हें पद्म श्री, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, पद्म भूषण, तानसेन सम्मान और 2008 ई. में 'भारत रत्न' से विभूषित किया गया। एक बार प्रधान मंत्री राजीव गांधी ने उन्हें राज्यसभा में भेजना चाहा तो उन्होंने अपने दोनों तानपूरों की ओर संकेत कर कहा कि मेरे लिए ये दोनों ही लोकसभा और राज्यसभा हैं। देश-राग का यह सर्वोत्तम स्वर 24 जनवरी, 2011 को सदा के लिए मौन हो गया, पर अपने गायन द्वारा वे सदा अमर रहेंगे। ■■■

स्वर के शिखर पुरुष
पंडित भीमसेन जोशी

पंडित भीमसेन जोशी ने खयाल गायकी के साथ-साथ भजन व अभंगों को नई ऊंचाईयों तक पहुंचाया। इन्होंने अपनी आवाज व गायन से हिंदुस्थानी संगीत को वैश्विक पटल पर पहचान दिलाई। संगीत के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान के लिए इन्हें अनेक राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित भी किया गया।

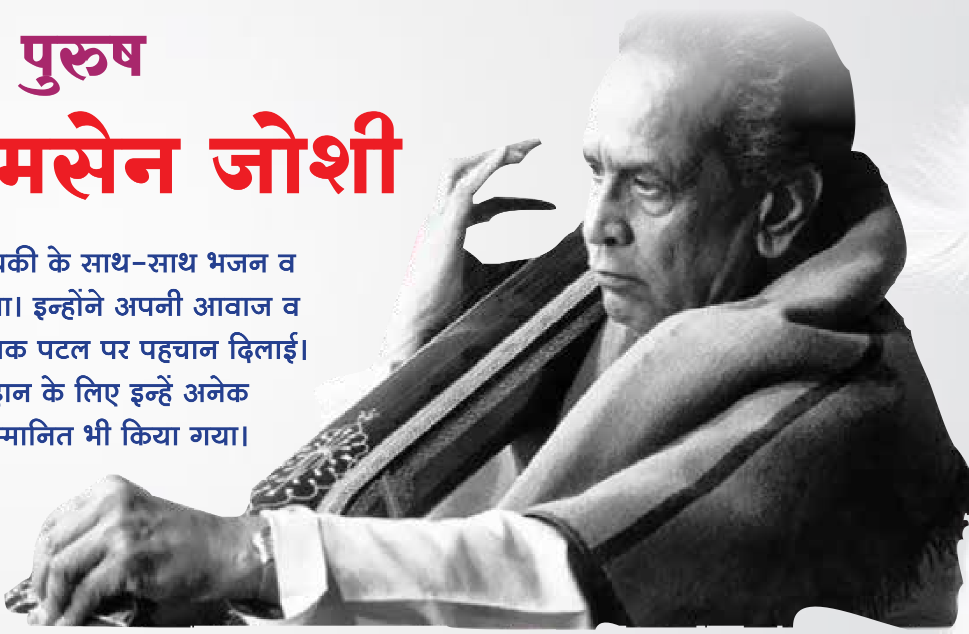

मनजीत प्राईड ग्रुप का 24वां वर्धापनदिन समारोह सम्पन्न

छत्रपति संभाजीनगर। रियल इस्टेट क्षेत्र में पिछले 2 दशकों से अधिक समय से पारदर्शिता, प्रतिबद्धता और गुणवत्ता के तीन सिद्धांतों का पालन करते हुए ग्राहकों का विश्वास बनाए रखने वाले मनजीत प्राईड ग्रुप ने विभिन्न क्षेत्रों के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में हर्षोल्लास के साथ अपनी 24वां वर्धापनदिन दिवस मनाया।

विगत 23 जनवरी को मराठवाड़ा की सबसे भव्य टाऊनशिप वन वर्ल्ड में आयोजित भव्य समारोह में मनजीत प्राईड ग्रुप की पिछले 23 वर्षो की सफल यात्रा की समीक्षा की गई। इस अवसर पर मनजीत प्राईड ग्रुप के संचालक भूपेंद्रसिंग राजपाल, नवीन बगडिया, नितीन बगडिया के साथ हनुमानप्रसाद बगडिया, वंश बगडिया, सिमर राजपाल, बिजनेस हेड नितीन लोखंडे और मनजीत प्राईड ग्रुप के सभी अधिकारी उपस्थित थे। उक्त आयोजन में उपस्थित लोगों ने मनजीत प्राईड ग्रुप की प्रगति पर अपने विचार व्यक्त किए तथा सराहना की। मनजीत प्राईड ग्रुप ने भविष्य में सभी के साथ मिलकर काम करने और नए एवं गुणवत्तापूर्ण परियोजनाओं के माध्यम से शहर के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देने का संकल्प लिया।

पुणे में 77वें गणतंत्र दिवस का आयोजन

77वां गणतंत्र दिवस विगत 26 जनवरी 2026 को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मोतीबाग कार्यालय में अत्यंत उत्साह और देशभक्ति के वातावरण में मनाया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन भारतीय संस्कृति संवर्धक संस्था द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय कीर्तनकार ह.भ.प. मोरेश्वरबुवा जोशी (चरहोलीकर) थे। उनके करकमलों द्वारा ध्वजारोहण सम्पन्न हुआ। इसके पश्चात अनुशासित ढंग से ध्वज को सलामी दी गई तथा राष्ट्रीय गान और वंदे मातरम का सामूहिक गायन किया गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का विशेष आकर्षण भव्य घोषवादन (पारम्परिक वाद्यवृंद) प्रदर्शन रहा, पुणे महानगर से जिसमें 68 वादकों ने भाग लिया। कार्यक्रम की प्रस्तावना भारतीय संस्कृति संवर्धक संस्था के अध्यक्ष राजीव जोशी ने रखी। कार्यक्रम का संचालन संस्था के न्यासी राजेंद्र वालेकर ने किया, जबकि जगदीश सोमण ने अपनी व्यक्तिगत पद्य की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर वरिष्ठ विधिज्ञ शरद चंद्रचूड़, महेश आठवले, कैलास सोनटक्के, अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य सुहासराव हिरेमठ, रविंद्र किरकोले, वरिष्ठ प्रचारक श्रीधर पंत फडके, भाऊराव क्षीरसागर, शिरीष भेडसगांवकर, प्रांत प्रचारक यशोधन वाळिंबे, महानगर प्रचारक रोहित रिसबूड, प्रतीक परळीकर, डॉ. मोरेश्वर गद्रे, अनिलराव देशपांडे, घोष प्रमुख वैभव गाडगीळ तथा संस्था के न्यासी प्रसाद खेडकर, बाजीराव मणेरे, प्रकाश आठवले, किरण गांधी एवं उदय पंचपोर प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

पितांबरी
देवभक्ती
अगरबत्ती
अनुभव करे भक्ति की शक्ति!
उत्सव महाशिवरात्रि का,
सुगंध महके
शिव उपासना का!
भगवान शिव को प्रिय कैलासपती फूल का सुगंध,
बेलपत्र की पाउडर और अन्य
घटक एकत्रित कर यह अगरबत्ती बनाई है।
Pitambari
Premium Quality
देवभक्ती
अगरबत्ती
शिव
उपासना
मसाला अगरबत्ती
शिव उपासना मसाला अगरबत्ती
Pitambari Products Pvt. Ltd.
CIN: U52291MH1989PTC051314
Maharashtra: 8291853804, North: 7011012599, South: 6366932555,
East: 7752023380, 9867102999, CRM: 022 - 67035564 / 5699,
Toll Free: 18001031299.